वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 399
ISBN 978-93-82071-85-3

नवनिधि विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 80वें जन्मजयंती महोत्सव वर्ष (अमृत महोत्सव-2013-2014) के अन्तर्गत पूज्य चारित्रश्रमणी आर्यिका श्री अभयमती माताजी (समाधिस्थ) के 72वें जन्मदिवस (मगसिर शु. सप्तमी) के अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2540	मूल्य
1100 प्रतियाँ	मगसिर शु. सप्तमी, 9 दिसम्बर 2013	24/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-पीठाधीश स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी

वर्तमान में-कलियुग में आज घर गृहस्थी में अनेक समस्याएँ आ जाती हैं जिससे अक्सर लोग माताजी के पास आते हैं और पूज्य माताजी से निवेदन करते हैं माताजी हमारे ऊपर बहुत संकट आया है आप ही इसे दूर कर सकती हैं। माताजी उन्हें यंत्र-मंत्र बता देती हैं और कहती हैं आप इसे श्रद्धापूर्वक करिए आपका संकट अवश्य दूर होगा।

इसके साथ ही माताजी एक बात प्रायः सबसे कहती हैं कि घर गृहस्थी में रहते हुए भी यदि आप लोग समय-समय पर पूजा विधान करते रहें, प्रतिदिन भगवान का दर्शन करें, अभिषेक, पूजन आदि करें तो संकट नहीं आएगा। आचार्यों ने शास्त्रों में श्रावक के षट्कर्त्तव्य बताए हैं—

'देवपूजा-गुरुपास्तिः-स्वाध्यायः-संयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थानां षट्कर्माणि दिने दिने।।

अर्थात् देवपूजा, गुरुओं की उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप और दान ये श्रावक के छह आवश्यक हैं। इन्हें प्रतिदिन करने से श्रावक धर्म को सार्थकहोता है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी चारित्रचन्द्रिका युगप्रवर्तिका, राष्ट्रगौरव परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने 300 ग्रंथों की रचना करके एक कीर्तिमान स्थापित किया है। इनमें से कुछ ग्रंथ अप्रकाशित हैं वे भी शीघ्र प्रकाशित हो रहे हैं। छोटे-बड़े मिलाकर 50 से अधिक विधानों की श्रृंखला में यह 'नवनिधि विधान' (श्री शांति कुंथु अरनाथ तीर्थंकरत्रय विधान) पूज्य माताजी ने प्रदान किया है। भगवान शान्तिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ के चार-चार कल्याणक से पवित्र हस्तिनापुर की भूमि पर रचा गया यह विधान अतिशय चमत्कारिक है। 'नवनिधि' भण्डार को देने वाला है। सभी रोग, शोक, दुख, दारिद्र्य को दूर करके सुख को देने वाला है। भक्ति में अचिन्त्य शक्ति है। भक्ति करते-करते भक्त एक दिन भगवान बन जाता है, तो छोटे-2 कार्य अवश्य ही सिद्ध हो जाएंगे। यह नूतन विधान सभी के लिए मंगलकारी हो, यही मंगल भावना है। पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु प्राप्त करें और वीरज्ञानोदय ग्रंथमाला दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करे यही मंगल कामना है।

प्रस्तावना

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती

भक्ति मार्ग में प्रवृत्त हुआ प्रत्येक प्राणी निवृत्ति की साधना करता हुआ अपनी चिच्चैतन्यस्वरूपी आत्मा को उज्ज्वल करके भगवान बना सकता है। श्रावक चूँकि सावद्य से पूर्ण निवृत्त नहीं हो सकता है तथापि अपने पाप पुंजों को अल्प अथवा परम्परागत नष्ट करने के लिए आत्महित के साधन गृहस्थ के षट्कर्म का पालन करना उसके आवश्यक होता है।

देवपूजा के अन्तर्गत इन्द्रध्वज, सिद्धचक्र, शांतिमंडल आदि विधान जो कि नैमित्तिक कार्य होते हैं, इनके द्वारा आत्मा में विशेष विशुद्धि उत्पन्न होती है। अष्टान्हिकादि पर्वों में सिद्धचक्र विधान करने की प्राचीन परम्परा चली आ रही है।

पूजा विधानों की श्रृंखला में परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने यह 'नवनिधि विधान' रचकर नूतनकृति के रूप में हमें प्रदान किया है। जिस प्रकार से लोग शान्तिविधान को एक दिन में सम्पन्न करके भगवान शान्तिनाथ की आराधना कर लेते हैं, जिससे अनेक अघटित घटनाओं के संकट से उनकी रक्षा हो जाती है, उसी प्रकार यह 'नवनिधि विधान' जिसमें हस्तिनापुर में जन्में भगवान शान्तिनाथ, कुंथुनाथ एवं अरहनाथ की पूजा है। ये तीनों भगवान तीर्थंकर, चक्रवर्ती और कामदेव तीन-2 पद से समन्वित हैं। इनकी पूजा, भक्ति सांसारिक सुखों के साथ-साथ नवनिधि, ऋद्धि, सिद्धि को प्रदान करने वाली है। इस विधान में प्रत्येक पूजा के अन्त में पूज्य माताजी ने लिखा है-

जो भाक्तिकजन तीर्थंकरत्रय-विधान भक्ती से करते हैं।
श्री शांतिनाथ श्री कुंथुनाथ, अरनाथ प्रभू को यजते हैं।।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सब रोग शोक भय हरते हैं।
नवनिधि ऋद्धी सिद्धी पाकर, कैवल्य ज्ञानमति लभते हैं।।

पूज्य माताजी ने इस विधान में भगवान शांति, कुंथु, अरहनाथ की स्तुति करते हुए मंगलाचरण से विधान का शुभारम्भ किया है। इस विधान में कुल चार पूजा है। पहली श्री शान्ति-कुंथु-अर तीर्थंकर की समुच्चय पूजा है। उस पूजा में नवनिधि के 9 अर्घ्य हैं। तीर्थक्षेत्र के 2 पूर्णार्घ्य है। उसके बाद दूसरी पूजा श्री शान्तिनाथ भगवान की है, जिसमें पंचकल्याणक के अर्घ्य एवं 108 अर्घ्य,

पूर्णार्घ्य एवं जयमाला है। इसी तरह से तीसरी पूजा श्री कुंथुनाथ भगवान की एवं चौथी श्री अरहनाथ भगवान की पूजा में– पंचकल्याणक के अर्घ्य, 108 अर्घ्य, 1 पूर्णार्घ्य एवं जयमाला है। इसके बाद बड़ी जयमाला एवं प्रशस्ति है। प्रशस्ति के बाद हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र की पूजा है।

इस प्रकार इस विधान में कुल 5 पूजा, नवनिधि के 9 अर्घ्य एवं शांति, कुंथु, अरनाथ के 108-108 अर्घ्य मिलाकर 9 + 108 + 108 + 108 = 333 अर्घ्य, 5 पूर्णार्घ्य एवं 5 जयमाला है। विधान के अंत में प्रशस्ति में पूज्य माताजी ने भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ एवं अरहनाथ को नमन करते हुए भगवान महावीर स्वामी एवं श्री गौतम गणधर स्वामी को नमन किया है और फिर अपनी गुरु परम्परा का वर्णन करते हुए विधान की अक्षुण्णता की भावना करते हुए लिखा है कि–

यह विधान युग युग तक भक्तों, को अतिशय पुण्य प्रदान करें।
जब तक यह तीर्थ हस्तिनापुर, मेरी रचना प्रभु गुण उचरे।।
जब तक यहाँ जम्बूद्वीप सुमेरु, तेरहद्वीप तीर्थ उत्तम।
यहाँ तीनलोक रचना सुंदर, तब तक विधान फल दे शुभतम।।

यह विधान की नूतन कृति आपके जीवन को मंगलमय बनावे, भगवान शान्तिनाथ, कुंथुनाथ एवं अरहनाथ की भक्ति से आप सभी लोग अपने मनवांछित कार्य की सिद्धि करें, यही मंगल भावना है।

दो शब्द

-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)

नमः श्री वर्धमानाय निर्धूत कलिलात्मने।
सालोकानां त्रिलोकानां यद्विद्या दर्पणायते।।

बीसवीं शताब्दी में मुनि परम्परा को जीवन्त करने वाले युगप्रवर्तक चारित्र-चक्रवर्ती आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज हुए हैं। जिनकी चर्या चतुर्थकालीन मुनियों के समान थी। इनके प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा प्राप्त कर, आर्यिका ज्ञानमती नाम पाकर, स्वनाम को सार्थक करते हुए परम पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने चारों अनुयोगों का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त करके, ग्रंथों का खूब स्वाध्याय, मनन, चिन्तन करके, अपने ज्ञान को परिपक्व करके 'सहस्रनाम' मंत्र से अपनी लेखनी का शुभारम्भ करके अब तक छोटे-बड़े सभी ग्रंथों को मिलाकर 300 ग्रंथों की रचना की है।

आज के वैज्ञानिक युग में टी. वी. पारस चैनल के माध्यम से लोग घर बैठे पूज्य माताजी के मुखारविंद से प्रतिदिन ज्ञानामृत का पान करते हैं। जब वे हस्तिनापुर आकर पूज्य माताजी का दर्शन करते हैं, तो गद्गद होकर कहते हैं– माताजी हम आपके शुद्ध शास्त्रीय प्रवचन सुनकर धन्य हो गए। आपके द्वारा रचित इन्द्रध्वज, सिद्धचक्र, शान्ति विधान आदि विधानों को पढ़कर, उनकी पूजाओं को सुनकर भक्तिरस से ओतप्रोत हो गए।

पूज्य माताजी के सानिध्य में प्रतिदिन कोई न कोई विधान होता ही रहता है। माइक के द्वारा विधान की पंक्तियाँ जम्बूद्वीप स्थल पर गूँजती रहती हैं। जिसे हम लोग कार्य करते हुए भी सुनते रहते हैं। विधान की 1–1 पंक्ति 1–1 शब्द में जिनागम का सार भरा रहता है।

मेरा परम सौभाग्य है कि पूज्य माताजी की कुल परम्परा में (उनकी बहन की पुत्री रूप में) जन्म लेकर, पूज्य माताजी को गुरुरूप में पाकर, उनसे ज्ञानामृत का पान करके अपने जीवन को धन्य किया है। यह 'नवनिधि विधान' मेरे जीवन में रत्नत्रय को प्राप्त करावे, गुरु की भक्ति, वैयावृत्ति करते हुए मैं भी रत्नत्रय प्राप्तकर अपनी मानव पर्याय को सार्थक करूँ। पूज्य माताजी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें यही भगवान से मंगल प्रार्थना है।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि–सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ नं.
1.	मंगलाचरण	1
2.	श्री शांति-कुंथु-अर तीर्थंकर पूजा (समुच्चय पूजा)	3
3.	श्री शांतिनाथ पूजा	10
4.	श्री कुंथुनाथ पूजा	30
5.	श्री अरनाथ तीर्थंकर पूजा	49
6.	बड़ी जयमाला	70
7.	प्रशस्ति	73
8.	हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र पूजा	74
9.	मंगल आरती	79
10.	भजन	80

मण्डल का नक्शा

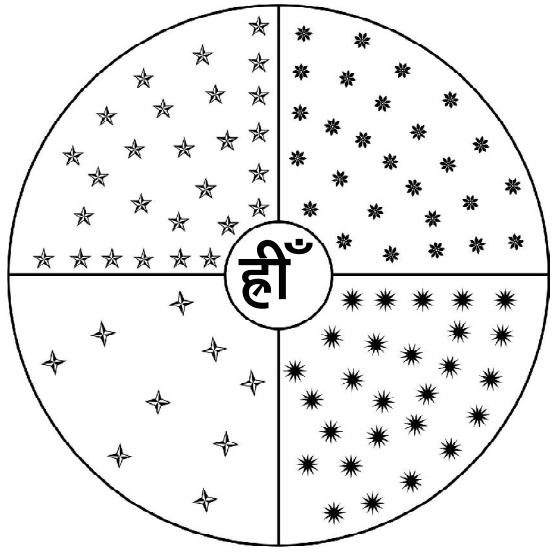

कुल अर्घ्य-333, पूर्णार्घ्य-5, जयमाला-5

प्रथम कोष्ठक में-9 अर्घ्य, द्वितीय कोष्ठक में-108 अर्घ्य, तृतीय कोष्ठक में-108 अर्घ्य, चतुर्थ कोष्ठक में 108 अर्घ्य

नवनिधि विधान

(श्री शांतिकुंथुअरनाथ तीर्थंकरत्रय विधान)

मंगलाचरण

मंगलं शांतिनाथोऽर्हन्, कुंथुनाथोऽस्तु मंगलम्।
मंगलं अरनाथोऽपि, जन्मभूमिश्च मंगलम्।।1।।

असंबाधा छंद- **शांतीशः कुर्यात्, त्रिभुवनजनतायै शं।**
(14) अक्षरी **वाणी ते पुष्यात् कलिमलहरिणी भव्यान्।।**
लोकांतं व्याप्तं तव धवलयशः स्वामिन्!।
शांतीशः कुर्यात् मम मनसि सदा शांतिं।।2।।

मालिनी छंद- **अतुलसुखयुतोऽयं कुंथुनाथस्त्रिलोक्यां।**
(15) अक्षरी **प्रथितसुखकरीयं हस्तिनापूः पृथिव्यां।।**
जिनवरजनकोऽयं सूरसेनः प्रसिद्धः।
मम भवतु सदायं मुक्तिलक्ष्म्यै जिनेशः।।3।।

मणिगुणनिकर छंद- **अर जिनवर! तव, पदयुगकमलं।**
(15) अक्षरी **वसतु मनसि मम कलिमलदलनं।।**
सुरनरमुनिगण-कृतबहुशरणम् ।
प्रभवति जिन! तव, शमदमसुवृषः।।4।।

-अनुष्टुप् छंद-

तीर्थकृच्चक्रभृत्कामदेव - त्रिपदधारिणः ।
शांतिकुंथ्वरतीर्थेशा, भवद्भ्योऽनन्तशो नमः।।5।।

-दोहा-

सोलहवें तीर्थेश प्रभु, पंचमचक्री ईश।
कामदेव हैं बारवें, नमूं-नमूं शांतीश।।6।।

सत्रहवें तीर्थेश जिन, छठे चक्रपति नाथ।
मदन तेरहें कुंथुजिन, नमूं नमाकर माथ।।7।।

अठारवें प्रभु तीर्थकर, सप्तम चक्री धन्य।
कामदेव चउदशम प्रभु, अर जिनपद नित वंद्य।।8।।

तीनों तीर्थंकर प्रभू, त्रय-त्रय पद के ईश।
मन-वच-तन त्रय से सदा, नमूं नमा कर शीश।।9।।

प्रभो ! आपके गुण रहे, नन्तानन्त प्रमाण।
तीन रत्न के हेतु ही, करूँ अनन्त प्रणाम।।10।।

।।अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।।

पूजा नं. १

श्री शांति-कुंथु-अर तीर्थंकर पूजा

(समुच्चय पूजा)

स्थापना –नरेन्द्र छंद

श्रीमन् शांति कुंथु अर जिनवर, तीर्थंकर पदधारी।
चक्रवर्ति सम्राट् हुए ये, कामदेव पदधारी।।
तिहुँजग भ्रमण विनाशन हेतू, इनका यजन करूँ मैं।
आह्वानन स्थापन करके, सन्निधिकरण करूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथ–कुंथुनाथ–अरनाथतीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथ–कुंथुनाथ–अरनाथतीर्थंकर समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथ–कुंथुनाथ–अरनाथतीर्थंकर समूह! अत्र मम सन्निहितो भवभव वषट् सन्निधीकरणं।

अथाष्टक –नरेन्द्र छंद

तीनलोक भर जाय नाथ मैं, इतना नीर पिया है।
फिर भी तृप्ति न हुई अतः अब, जल से धार दिया है।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथ–कुंथुनाथ–अरनाथतीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्यु–विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में बहु देह धरे मैं, उनसे शांति न पाई।
इसी हेतु चंदन से पूजूँ, मिले शांति सुखदाई।।शांति.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्री शांतिनाथ–कुंथुनाथ–अरनाथतीर्थंकरेभ्यः संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह शत्रु ने आत्मसौख्य मुझ, खंड खंड कर रक्खा।
शालि पुंज से जजूँ अखंडित, सौख्य मिले यह इच्छा।।
शांति कुंथु अर तीर्थंकर को, पूजूँ मनवचतन से।
रत्नत्रयनिधि मिले नाथ अब, छूटूँ भवभव दुख से।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथ–कुंथुनाथ–अरनाथतीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने तीनजगत को, निज के वश्य किया है।
उसके जेता आप अतः मैं, अर्पण पुष्प किया है।।शांति.।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथ–कुंथुनाथ–अरनाथतीर्थंकरेभ्यः कामवाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादी से क्षुध व्याधी, भोजन से नहीं मिटती।
व्यंजन सरस बनाकर जिनपद, अर्पण से वह नशती।।शांति.।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथ–कुंथुनाथ–अरनाथतीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहतिमिर ने तीन जगत को, अंध समान किये हैं।
दीपक से तुम आरति करके, ज्ञान उद्योत हिये है।।शांति.।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथ–कुंथुनाथ–अरनाथतीर्थंकरेभ्यः मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म ये संग लगे हैं, इनका नाश करूँ मैं।
तुम सन्निधि में धूप जलाकर, सुरभित धूम्र करूँ मैं।।शांति.।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथ–कुंथुनाथ–अरनाथतीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

बहुत कुदेव नमन कर मैंने, अविनश्वर फल चाहा।
फिर भी आश हुई नहिं पूरी, अतः आप ढिग आया।।शांति.।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथ–कुंथुनाथ–अरनाथतीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आदिक अर्घ्य सजाकर, स्वर्णथाल भर लाया।
सर्वोत्तम फल पाने हेतू, अर्घ्य चढ़ाने आया।।शांति.।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथतीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

शांति कुंथु अर नाथ के, चरणों में त्रय बार।
शांतीधारा मैं करूँ, मिले शांति भंडार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बकुल कमल चंपा जुही, सुरभित हरसिंगार।
तुम पद पुष्पांजलि करूँ, होवे सौख्य अपार।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

प्रथम वलय में नवनिधि के 9 अर्घ्य

(तीर्थंकरत्रय के 9 अर्घ्य)

।।अथ मंडलस्योपरि प्रथमवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत।

-शंभु छंद-

श्रीशांतिनाथ प्रभु सोलहवें, तीर्थंकर त्रिभुवन के स्वामी।
भव्यों को शांतिप्रदाता हैं, त्रिभुवन शांतीकर जगनामी।।
मैं पूजूँ अर्घ्य चढ़ाकर के, मेरे भव भव दुख दूर करें।
भक्तों को नवनिधिदाता हैं, आध्यात्मिक संपति पूर्ण भरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं षोडशतीर्थंकरपदप्राप्ताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ पंचम चक्री, षट्खंड मही का राज्य किया।
फिर ध्यान चक्र के द्वारा ही, संपूर्ण कर्म का नाश किया।।मैं.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचमचक्रवर्तिपदप्राप्ताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ प्रभु बारहवें, वर कामदेव पद के धारी।
अतिशायि रूप त्रिभुवन में भी, सब जन मन को आनंदकारी।।मैं.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वादशकामदेवपदप्राप्ताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंथुनाथ प्रभु सत्रहवें, तीर्थंकर जग मंगलकारी।
इनकी भक्ती सब भव्यों को, अतिशायी सुख संपतिकारी।।
मैं पूजूँ अर्घ्य चढ़ाकर के, मेरे भव भव दुख दूर करें।
भक्तों को नवनिधिदाता हैं, आध्यात्मिक संपति पूर्ण भरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तदशतीर्थंकरपदप्राप्ताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंथुनाथ निज चक्ररत्न, को आगे कर दिग्विजय किया।
साम्राज्य त्याग कर दीक्षा ले, फिर धर्मचक्र को प्राप्त किया।।मैं.।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं षष्ठचक्रवर्तिपदप्राप्ताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरहवें कामदेव पदधर, श्री कुंथुनाथ जग मान्य हुये।
सुरपति ने नेत्र हजार बना, कर निरखा तदपि अतृप्त रहे।।मैं।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशकामदेवपदप्राप्ताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरनाथ जिनेश्वर मोह अरी, को जीता जिनवर कहलाये।
तीर्थंकर अट्ठारहवें प्रभु, मुनिगण सुरनर प्रभु गुण गायें।।मैं।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टादशतीर्थंकरपदप्राप्ताय श्रीअरनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सप्तम चक्रवर्ति जिनवर, षट्खंड भूमि साम्राज्य लिया।
फिर धर्मचक्र को प्राप्त किया, त्रिभुवन का उत्तम राज्य लिया।।मैं.।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तमचक्रवर्तिपदप्राप्ताय श्रीअरनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदहवें कामदेव मानें, अतिशय सुन्दर अरनाथ यहां।
त्रिभुवन अतिशायी रूप देख, नहिं तृप्त हुये सुरदेव यहां।।मैं।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दशचक्रवर्तिपदप्राप्ताय श्रीअरनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-

श्रीशांतिनाथ, श्री कुंथुनाथ श्री, अरहनाथ त्रय तीर्थंकर।
तीनों तीर्थंकर चक्रवर्ति, तीनों ही कामदेव सुंदर।।

नवनिधि चौदहरत्नों को तज, दीक्षा ले ध्यानचक्र पाया।
फिर केवलज्ञानी धर्मचक्र से त्रिभुवन का गुरुपद पाया।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंकरचक्रवर्तिकामदेवपदसमन्वित-श्रीशांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

तीर्थक्षेत्र के 2 पूर्णार्घ्य

-दोहा-

शांति कुंथु अरनाथ के, गर्भ जन्म तप ज्ञान।
हस्तिनागपुर में हुए, चार कल्याण महान् ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं हस्तिनागपुरे गर्भजन्मतपोज्ञानकल्याणकप्राप्तेभ्यः श्रीशांतिकुंथु-अरतीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति कुंथु अरनाथ ने, पाया पद निर्वाण।
श्री सम्मेदाचल जजूँ, सिद्धक्षेत्र सुखदान।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं सम्मेदशिखरात् निर्वाणपदप्राप्तेभ्यः श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-जाप्य-

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथतीर्थंकरेभ्यो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंकरचक्रवर्तिकामदेवपदसमन्वित-श्रीशांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथेभ्यो नमः।

(दोनों में से कोई भी एक मंत्र 108 बार या 9 बार सुगंधित पुष्पों से या लवंग से या पीले चावल से जपें।)

जयमाला

-दोहा-

हस्तिनागपुर में हुये, काश्यप गोत्र ललाम।
नमूँ नमूँ नत शीश मैं, शांति कुंथु अर नाम।।1।।

-शंभु छंद-

जय शांतिनाथ तुम तीर्थंकर, चक्री औ कामदेव जग में।
माता ऐरावति धन्य हुईं, पितु विश्वसेन भी धन्य बने।।
भादों वदि सप्तमि गर्भ बसे, जन्में वदि ज्येष्ठ चतुर्दशि में।
इस ही तिथि में दीक्षा लेकर, सित पौष दशमि केवली बने।।2।।

शुभ ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि में, शिवपद साम्राज्य लिया उत्तम।
इक लाख वर्ष आयू चालिस, धनु[1] तुंग चिह्नमृग तनु स्वर्णिम।।
हे शांतिनाथ! तीनों जग में, इक शांती के दाता तुमही।
इसलिये भव्यजन तुम पद का, आश्रय लेते रहते नितही।।3।।

श्री कुंथुनाथ पितु सूरसेन, माँ श्रीकांता के पुत्र हुए।
श्रावणवदि दशमी गर्भ बसे, वैशाख सितैकम[2] जन्म लिये।।
इस ही तिथि में दीक्षा लेकर, सित चैत्र तीस केवलज्ञानी।
वैशाख सितैकम मुक्ति बसे, पैंतिस धनु तुंग देह नामी।।4।।

पंचानवे सहसवर्ष आयू, स्वर्णिम तनु छाग[3] चिह्न प्रभु को।
सत्रहवें तीर्थंकर छट्ठे, चक्रेश्वर कामदेव तनु हो।।
तुम पदपंकज का आश्रय ले, भविजन भववारिधि तरते हैं।
निजआत्मसौख्य अमृत पीकर, अविनश्वर तृप्ती लभते हैं।।5।।

अरनाथ! सुदर्शन पिता आप, माँ ख्यात मित्रसेना जग में।
फाल्गुन सित तीज गर्भ आये, मगसिर सित चौदश को जन्में।।
मगसिर सित दशमी दीक्षा ले, कार्तिक सित बारस ज्ञानउदय।
प्रभु चैत्र अमावस्या शिवपद, धनु तीस तुंग तनु सुवरणमय।।6।।

चौरासी सहसवर्ष आयू, प्रभु चिह्न मीन[4] से जग जानें।
हम भी तुम पद पंकज में नत, सब रोग शोक संकट हानें।।
जय जय रत्नत्रय तीर्थंकर, जय शांति कुंथु अर तीर्थेश्वर।
जय जय मंगलकर लोकोत्तम, जय शरणभूत हैं परमेश्वर।।7।।

---

१. धनुष। २. सुदी एकम्। ३. बकरा। ४. मछली।

मैं शुद्ध बुद्ध हूँ सिद्ध सदृश, मैं गुण अनंत के पुञ्जरूप।
मैं नित्य निरंजन अविकारी, चिच्चिंतामणि चैतन्यरूप।।
निश्चयनय से प्रभु आप सदृश, व्यवहार नयाश्रित संसारी।
तुम भक्ती से यह शक्ति मिले, निज संपत्ति प्राप्त करूँ सारी।।8।।

–दोहा–

तुम पद भक्ति प्रसाद से, मिले यही वरदान।
'ज्ञानमती' निधि पूर्ण हो, मिले अंत निर्वाण।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिकुंथुअरतीर्थंकरेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो भाक्तिकजन तीर्थंकरत्रय–विधान भक्ती से करते हैं।
श्री शांतिनाथ श्री कुंथुनाथ, अरनाथ प्रभू को यजते हैं।।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सब रोग शोक भय हरते हैं।।
नवनिधि ऋद्धी सिद्धी पाकर, कैवल्य ज्ञानमति लभते हैं।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. २

श्री शांतिनाथ पूजा

स्थापना –गीता छंद

जो गणधरों से वंद्य हैं बारह सभा के नाथ हैं।
निज भक्त को संसार में करते सदैव सनाथ हैं।।
उन शांतिनाथ जिनेंद्र को मैं आज पूजूँ भाव से।
निज आत्म निधि की प्राप्ति हो अतएव थापूँ चाव से।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक –चाल –नंदीश्वर पूजा

यमुना नदि का शुचिनीर, झारी पूर्ण भरूँ।
मैं पाऊँ भवदधि तीर, तुम पद धार करूँ।।
श्री शान्तिनाथ भगवान, बारह गण वंदित।
हो स्वपर भेदविज्ञान, पूजूँ मैं संप्रति।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन सार, गंध सुगंध करे।
चर्चूं जिनपद सुखकार, मन की तपन हरे।।श्री शान्तिनाथ.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोतीसम अक्षत लाय, पुंज चढ़ाऊँ मैं।
निज अक्षयपद को पाय, यहाँ न आऊँ मैं।।श्री शान्तिनाथ.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला मचकुंद गुलाब, चुन चुन के लाऊँ।
अर्पूं जिनवर चरणाब्ज, निजसुखयश पाऊँ।।श्री शांतिनाथ.।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं लड्डू मोतीचूर, थाली भर लाऊँ।
हो क्षुधा वेदना दूर, अर्पत सुख पाऊँ।।श्री शान्तिनाथ.।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृतमय दीपक की ज्योति, जग अंधेर हरे।
मुझ मोहतिमिर हर ज्योति, ज्ञानउद्योत करे।।श्री शान्तिनाथ.।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंध सुगंधित धूप, खेऊँ अगनी में।
उड़ती दशदिश में धूम्र, फैले यश जग में।।श्री शान्तिनाथ.।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला अंगूर अनार, श्रीफल भर थाली।
अर्पूं जिन आगे सार, मनरथ नहिं खाली।।श्री शान्तिनाथ.।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल आदिक अर्घ्य बनाय उसमें रत्न मिला।
जिन आगे नित्य चढ़ाय, पाऊँ सिद्ध शिला।।श्री शान्तिनाथ.।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

सुवरण झारी में भरूँ, गंगा नदि को नीर।
शांती धारा मैं करूँ, मिले भवोदधि तीर।।1।।

शांतये शांतिधारा।

चंप चमेली केवड़ा, बेला बकुल गुलाब।
पुष्पांजलि अर्पण करत, शीघ्र स्वात्म सुख लाभ।।2।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–रोला छंद–

भादों कृष्णा पाख, सप्तमि तिथि शुभ आई।
गर्भ बसे प्रभु आप, सब जन मन हरषाई।।
इन्द्र सुरासुर संघ, उत्सव करते भारी।
हम पूजें धर प्रीति, जिनवर पद सुखकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं भाद्रपदकृष्णासप्तम्यां श्रीशांतिनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

जन्म लिया प्रभु आप, ज्येष्ठवदी चौदस में।
सुरगिरि पर अभिषेक, किया सभी सुरपति ने।।
शांतिनाथ यह नाम, रखा शांतिकर जग में।
हम नावें निज माथ, जिनवर चरणकमल में।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा ली प्रभु आप, ज्येष्ठ वदी चौदस के।
लौकांतिक सुर आय, बहु स्तवन उचरते।।
इंद्र सपरिकर आय, तप कल्याणक करते।
हम पूजें नत माथ, सब दुख संकट हरते।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान विकास, पौष सुदी दशमी के।
समवसरण में नाथ, राजें अधर कमल पे।।
इंद्र करें बहु भक्ति, बारह सभा बनी हैं।
सभी भव्य जन आय, सुनते दिव्य धुनी हैं।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं पौषशुक्लादशम्यां श्रीशांतिनाथतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राप्त किया निर्वाण, ज्येष्ठ वदी चौदश में।
आत्यंतिक सुखशांति, प्राप्त किया उस क्षण में।।
महामहोत्सव इंद्र, करते बहुवैभव से।
हम पूजें तुम पाद, छुटें सभी भवदुःख से।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशांतिनाथतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

विश्वशांतिकर्ता प्रभो! शांतिनाथ भगवान।
पूर्ण अर्घ्य अर्पण करत, पाऊँ सौख्य निधान।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

द्वितीय वलय में अथ 108 अर्घ्य

गुणी जनों में गुण रहे, बिन आश्रय न बसंत।
गुणयुत नामों को यजत, गुणी स्वयं पूजंत।।

।।अथ मंडलस्योपरि द्वितीयवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

चाल - हे दीनबंधु.....

हे नाथ 'दिव्यभाषापति' आप कहाये।
अठरा महाभाषा व लघू सात सौ गाये।।
श्री शांतिनाथ पूजा भव व्याधि हरेगी।
ये ज्ञानज्योति देके अज्ञान हरेगी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यभाषापतिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'दिव्य' तुम हो, अतिशय सुरूप से।
नर सुर से अधिक सुंदर तन आपका दिपे।।श्री.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'पूतवाक्' आपकी वाणी पवित्र है।
सब दोष से विवर्जित अतिशय विशुद्ध है।।श्री.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूतवाक्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'पूतशासन' तुम मत पवित्र है।
वह पूर्व अपर के विरोध दोष रहित है।।
श्री शांतिनाथ पूजा भव व्याधि हरेगी।
ये ज्ञानज्योति देके अज्ञान हरेगी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूतशासननामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूतात्मा' प्रभु आपकी आत्मा पवित्र है।
अरु आप भव्यजीव को करते पवित्र हैं।।श्री.।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूतात्मानामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'परमज्योति' आप ज्योतिपुंज हैं।
उत्कृष्ट ज्ञानज्योति रूप तेजपुंज हैं।।श्री.।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमज्योतिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'धर्माध्यक्ष' चारित के अधीश हो।
दशधर्म के अध्यक्ष ज्ञान के अधीश हो।।श्री.।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्माध्यक्षनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इंन्द्रियजयी दमी मुनि के ईश आप हैं।
हे नाथ 'दमीश्वर' प्रसिद्ध मुक्तिनाथ हैं।।श्री.।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं दमीश्वरनाथसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार मोह संपदा लक्ष्मी के पती हो।
हे नाथ आप श्रीपति मुक्ती के पती हो।।श्री.।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपतिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भगवान्' आप ज्ञान व ऐश्वर्य पूर्ण हो।
सुरपूज्य आठ प्रातिहार्य विभव पूर्ण हो।।श्री.।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं भगवान्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अर्हंत' इन्द्र आदि से पूजा को प्राप्त हो।
अरि रज[1] रहस्य चार कर्म रहित आप हो।।श्री.।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं अर्हंतनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. अन्तराय कर्म।

हे नाथ 'अरज' आप कर्मधूलि हीन हो।
ज्ञानावरण व दर्शनावरण विहीन हो।।श्री.।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं अरजस्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'विरज' आप कर्मरज विहीन हो।
भव्यों की कर्मधूलि नाश में प्रवीण हो।।श्री.।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं विरजस्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'शुचि' ब्रह्मचर्य से पवित्र हो।
निज शुद्ध आत्म तीर्थ स्नान से पवित्र हो।।श्री.।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुचिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'तीर्थकृत्' भवोदधि से भव्य तारते।
श्रुत द्वादशांग तीर्थ के कर्ता बखानते।।श्री.।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थकृत्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण मोह आवरण व विघ्न नाशिया।
कैवल्य पाय 'केवली' हो मुनि भाषिया।।श्री.।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं केवलिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ईशान' आप अनंत शक्ति से समर्थ हो।
अहमिंद्र आदि के भि ईश जग प्रसिद्ध हो।।श्री.।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं ईशाननामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूजार्ह' पाँचविद्या अर्चना के योग्य हो।
मह कल्पतरु ऐन्द्रध्वज आदि पूज्य हो।।श्री.।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूजार्हनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कर्म मल कलंक धोय शुद्ध आत्मा।
हे नाथ 'स्नातक' सुज्ञान चंद्रपूर्णिमा[1]।।श्री.।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्नातकनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'अमल' देह मलादि विहीन हो।
नैर्मल्य आप राग आदि दोष क्षीण हो।।श्री.।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमलनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

१. पूर्णज्ञान सहित हैं।

'अनंतदीप्ति' नाथ ज्ञानदीप्ति धारते।
निजदेह दीप्ति से समस्त ध्वांत वारते।।
श्री शांतिनाथ पूजा भव व्याधि हरेगी।
ये ज्ञानज्योति देके अज्ञान हरेगी।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनंतदीप्तिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पाँच विधे ज्ञान से 'ज्ञानात्मा' कहे।
कैवल्यज्ञानदेहमयी आत्मा कहे।।श्री.।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानात्मानामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'स्वयंबुद्ध' स्वयं ही प्रबुद्ध हो।
गुरू की सहाय बिन समस्त ज्ञान युक्त हो।।श्री.।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंबुद्धनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रजापति' त्रिलोक जीव रक्षते पती।
संपूर्ण प्रजा को सदा पालें प्रजापती।।श्री.।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रजापतिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'मुक्त' कर्म बंधनादि मुक्त हो।
संपूर्ण दोष से विमुक्त भ्रमण मुक्त हो।।श्री.।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुक्तनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल-नंदीश्वर पूजा

प्रभु 'शक्त' नाम है आप, परिषह सहन किया।
तुम भक्ति करे निष्पाप, इससे शरण लिया।।
श्री शांतिनाथ की भक्ति, भवभव ताप हरे।
प्रगटावे आतम शक्ति, सौख्य अबाध करे।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं शक्तनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निराबाध' उपसर्ग, बाधा विरहित हो।
निज भक्तों को सुख स्वर्ग, देते शिवप्रद हो।।श्री.।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं निराबाधनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निष्कल' देह विमुक्त, काल कला हीना।
विज्ञान कलागुण युक्त, कवलाहार बिना।।श्री.।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भुवनेश्वर' त्रिभुवन ईश, भविजन के त्राता।
मैं जजूँ नमाकर शीश, पाऊँ सुख साता।।श्री.।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं भुवनेश्वरनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'निरंजन' आप, कर्मांजन शून्या।
सब द्रव्यभाव नोकर्म, विरहित सुख पूर्णा।।श्री.।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरंजननामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'जगज्ज्योति' जिनराज, केवलज्ञान लहा।
सब लोक अलोक प्रकाश, अनुपम ज्योतिमहा।।श्री.।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगज्ज्योतिर्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'निरुक्तोक्ती' य, सार्थक वचन धरो।
सब पूर्वापर अविरोधि, हित उपदेश करो।।श्री.।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरुक्तोक्तिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'निरामय' आप, व्याधि विवर्जित हो।
पूजत ही स्वास्थ्य सुलाभ, भविजन हर्षित हो।।श्री.।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरामयनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अचलस्थिति' हे जिननाथ, तुम थल अचल कहा।
हो अचल आत्म थल वास, पूजूँ हरस महा।।श्री.।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचलस्थितिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अक्षोभ्य' नाथ नहिं क्षोभ, तुममें कभी हुआ।
सब मिटे चित्त का क्षोभ, ये ही विनय किया।।श्री.।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षोभ्यनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कूटस्थ' कूट-लोकाग्र, ऊपर तिष्ठे हो।
करिये मुझ मन एकाग्र, ईप्सित देते हो।।श्री.।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं कूटस्थनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ आप 'स्थाणु', गमनागमन नहीं।
हे लोकशिखर विश्राम, काल अनंत सही।।
श्री शांतिनाथ की भक्ति, भवभव ताप हरे।
प्रगटावे आतम शक्ति, सौख्य अबाध करे।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्थाणुनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अक्षय' क्षय नहिं होय, काल अनंते भी।
याइंद्रिय सुख नहिं कोय, आप अतीन्द्रिय भी।।श्री.।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं अक्षयनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'अग्रणी' आप, जग में मुख्य सही।
ले जाते तुम लोकाग्र, भवि को सौख्य मही।।श्री.।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्रणीनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ 'ग्रामणी' आप, जग में भव्यों को।
करवाते मुक्ती प्राप्त, निज सुख दो मुझको।।श्री.।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं ग्रामणीनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भविजन को हितपथ माहिं, ले जाते 'नेता'।
मैं पूजूँ भक्ति बढ़ाय, शिवपथ के नेता।।श्री.।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं नेतृनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु द्वादशांगमय शास्त्र रचना करते हो।
इसलिये 'प्रणेता' आप, हित उपदिशते हो।।श्री.।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रणेतृनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु न्यायशास्त्र उपदेश, करते आप सदा।
तुम 'न्यायशास्त्रवित्' नाम, कहते इंद्र मुदा।।श्री.।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं न्यायशास्त्रवित्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नित धर्मामृत उपदेश, देते गुरू 'शास्ता'।
हित अनुशास्ता परमेश, देवो मुझ साता।।श्री.।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं शास्तृनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'धर्मपती' तुम नाम, धर्माधीश्वर हो।
दश धर्मों के तुम धाम, शिवप्रद ईश्वर हो।।श्री.।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपतिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चउविध[1] धर्मसमेत, धर्म्य कहाते हो।
रत्नत्रय[2] जीवदयादि[3], वस्तुस्वभाव[4] कहो।।श्री.।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्म्यनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम आत्मा धर्मस्वरूप, शिवफल प्राप्त किया।
'धर्मात्मा' नाम अनूप, सुरपति आन दिया।।श्री.।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मात्मन्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'धर्मतीर्थकृत' आप, धर्म सुतीर्थ किया।
सम्यक् चारितमय तीर्थ, का उपदेश दिया।।श्री.।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थकृत्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'वृषध्वज' आप प्रसिद्ध, धर्मध्वजा धारो।
तुम वृषभ चिन्ह से सिद्ध, पाप सु परिहारो।।श्री.।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषध्वजनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृष-धर्म अहिंसारूप, उसके स्वामी हो।
हो 'वृषाधीश' निज रूप, अंतर्यामी हो।।श्री.।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषाधीशनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-चामर छंद-

नाथ 'वृषकेतु' आप धर्म की ध्वजा करो।
जैन धर्म की ध्वजा त्रिलोक में भि फरहरो।।
शांतिनाथ की सदा करूँ उपासना।
आत्म सौख्य प्राप्त हो जहाँ पे दुःख रंचना।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषकेतुनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. क्षमादि धर्म। २. रत्नत्रय धर्म। ३. जीवदया धर्म। ४. वस्तुस्वभाव धर्म।

कर्म शत्रु नाश हेतु धर्मशास्त्र धारते।
नाथ! 'वृषायुध' अनंत जन्म को निवारते।।
शांतिनाथ की सदा करूँ उपासना।
आत्म सौख्य प्राप्त हो जहाँ पे दुःख रंचना।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषायुधनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'वृष' नामधारि धर्मरूप विश्व में।
धर्ममय पियूष वृष्टि कारि मेघ भव्य में।।शांति.।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'वृषपती' दयामयी सुधर्म के पती।
आप शर्ण पाप भव्य लेय पंचमी गती।।शांति.।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषपतिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'भर्तृ' आप भव्य जीव पोषते सदा।
दुःख से निकाल श्रेष्ठ सौख्य में धरें सदा।।शांति.।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं भर्तृनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'वृषभांक' बैल चिन्ह आपका कहा।
श्रेष्ठ धर्म चिन्ह से समस्त को सुखी किया।।शांति.।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषभांकनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'वृषोद्भव' सुआप धर्म को जनम दिया।
धर्म से हि तीर्थनाथ होय जन्म धारिया।।शांति.।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं वृषोद्भवनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भो 'हिरण्यनाभि' स्वर्ण रूप नाभि धारते।
आप गर्भ पूर्व इन्द्र स्वर्णवृष्टि कारते।।शांति.।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यनाभिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भूत आतमा' जिनेश! सत्यरूप आतमा।
आप पाद शीश नाय होऊँ अंतरातमा।।शांति.।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूतात्मन्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भूभृत्' प्रभो! समस्त भव्यजीव पोषते।
आप शर्ण आय साधु सर्व कर्म धोवते।।शांति.।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूभृत्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भूत भावनो' सुआप भावना सुउत्तमा।
हाथ जोड़ शीश नाय भव्य जांय मुक्ति मा।।शांति.।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूतभावननामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'प्रभव' आप मुक्ति प्राप्ति हेतु भव्य को।
आप जन्म है प्रशंस सौख्य हेतु विश्व को।।शांति.।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'विभव' भव विमुक्त भव्य भव विनाशते।
भव विशिष्ट पाय धर्मचक्र को चलावते।।शांति.।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं विभवनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'भास्वान्' आप ज्ञानदीप्ति रूप हो।
आत्म को प्रकाश्य भव्य को प्रकाश हेतु हो।।शांति.।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं भास्वान्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'भव' उत्पत्ति व्यय व ध्रौव्य सत् रूप हो।
भव्य चित्त मांहि होय पापपंक धोत हो।।शांति.।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं भवनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भाव' आप चित्स्वरूप स्वात्म में हि लीन हो।
साधुवृन्द के हृदय निलीन दुःख हीन हो।।शांति.।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं भावनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'भवांतको' चतुर्गती भवो कुनाशिया।
भव्य के अनंतभव क्षणेक में विनाशिया।।शांति.।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं भवांतकनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भो! 'हिरण्यगर्भ' गर्भ पूर्व स्वर्ण वर्षते।
आपके पिता कि जीत ना किसी से हो सके।।शांति.।।68।।

ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यगर्भनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीगरभ' सुआप अन्तरंग नंतसंपदा।
श्री सु आदि देवियों ने मात सेव की मुदा।।
शांतिनाथ की सदा करूँ उपासना।
आत्म सौख्य प्राप्त हो जहाँ पे दुःख रंचना।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीगर्भनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भो! 'प्रभूतविभव' आपका विभव महान है।
तीन लोक साम्राज्य पाय सुख निधान हैं।।शांति.।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूतविभवनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'अभव' आप जन्म ना धरें कभी यहाँ।
आप पाद सेय भव्य जनम नाशते यहाँ।।शांति.।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभवनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'स्वयंप्रभु' आप ही स्वयं समर्थ हैं।
सर्व कर्म नाश हेतु आप पूर्ण दक्ष हैं।।शांति.।।72।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंप्रभुनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'प्रभूतात्मा' सुआप आतमा यहाँ।
ज्ञान से समस्त लोक व्यापता सुखावहा[1]।।शांति.।।73।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूतात्मन्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भूतनाथ' सर्वजीव के हि आप नाथ हो।
आप भक्ति से मुनीशवृंद भी सनाथ हों।।शांति.।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूतनाथनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'जगतत्प्रभु' त्रिलोक स्वामि हो समर्थ हो।
सर्व सौख्यदान हेतु आप पूर्ण दक्ष हो।।शांति.।।75।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगतत्प्रभुनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-सखी-छंद-

'सर्वादि' सर्व-जग आदी। तुमसे सृष्टी उत्पादी।।
प्रभु शांतिनाथ को पूजूँ। सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वादिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

१. सुख को देने वाला।

हे नाथ! 'सर्वदृक्' तुम हो।
सब वस्तु देखते प्रभु हो।।
प्रभु शांतिनाथ को पूजूँ।
सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।77।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदृकनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सार्व' सभी को पालें।
सबका हित करने वाले।।प्रभु.।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हं सार्वनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वज्ञ' सर्व जग जानो।
त्रैलोक्य त्रिकालिक जानो।।प्रभु.।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वज्ञनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम्हीं 'सर्वदर्शन' हो।
सब कुमतों के मर्दक हो।।प्रभु.।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदर्शननामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सर्वात्मा' तुम अंतर में।
सब वस्तु झलकती क्षण में।।प्रभु.।।81।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वात्मन्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सर्वलोकेशा'।
तिहुँलोक अलोक अधीशा।।प्रभु.।।82।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकेशनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'सर्वविद्' मानें।
इक क्षण में सबको जानें।।प्रभु.।।83।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वविद्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सर्वलोकजित्' तुम हो।
पणविध संसार विजित् हो।।प्रभु.।।84।।

ॐ ह्रीं अर्हं सर्वलोकजित्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुगति' मोक्षगति सुन्दर।
कैवल्यज्ञान उत्तम धर।।
प्रभु शांतिनाथ को पूजूँ।
सब आधि-व्याधि से छूटूँ।।85।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुगतिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुश्रुत' अतिशायि प्रसिद्धा।
सब भावश्रुतों के धर्ता।।प्रभु.।।86।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुतनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुश्रुत्' सब अरज सुना है।
भव्यों हित मार्ग भणा है।।प्रभु.।।87।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुश्रुत्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप वचन उत्तम हैं।
अतएव 'सुवाक्' प्रथम हैं।।प्रभु.।।88।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुवाक्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सूरि' सभी के गुरू हो।
सब विद्याओं के धुरि हो।।प्रभु.।।89।।

ॐ ह्रीं अर्हं सूरिनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बहुश्रुत' सब श्रुत के ज्ञानी।
तुमसे प्रकटी जिनवाणी।।प्रभु.।।90।।

ॐ ह्रीं अर्हं बहुश्रुतनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्रुत' त्रिभुवन विख्याता।
श्रुत बिना चराचर ज्ञाता।।प्रभु.।।91।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्रुतनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वतःपाद' तम घाती।
तुम ज्ञान किरण जग व्यापी।।प्रभु.।।92।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वतःनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'विश्वशीर्ष' सिरताजो।
तुम लोक शिखर पर राजो।।प्रभु.।।93।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वशीर्षनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शुचिश्रवा' तुम कर्णा।
भवि वचन सुनें दें शर्णा।।प्रभु.।।94।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुचिश्रवानामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तुम 'सहस्रशीर्षा' हो।
आनन्त्य सुखी कीर्ता हो।।प्रभु.।।95।।

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्रशीर्षनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'क्षेत्रज्ञ' क्षेत्र-आत्मा को।
जाना सब कर आत्मा को।।प्रभु.।।96।।

ॐ ह्रीं अर्हं क्षेत्रज्ञनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सहस्राक्ष' जग मानें।
आनन्त्य पदार्थ सुजानें।।प्रभु.।।97।।

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्राक्षनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सहस्रपात्' जगव्यापा।
तुम बल अनंत जगख्याता।।प्रभु.।।98।।

ॐ ह्रीं अर्हं सहस्रपात्नामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भूत भव्यभवद्भर्ता' हो।
त्रैकालिक सुख कर्ता हो।।प्रभु.।।99।।

ॐ ह्रीं अर्हं भूतभव्यभवद्भर्तृनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वविद्यामहेश्वर' तुम ही।
सब विद्या के ईश्वर ही।।प्रभु.।।100।।

ॐ ह्रीं अर्हं विश्वविद्यामहेश्वरनामसमन्विताय श्रीशांतिनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

शाश्वत धर्म निरूप्य, नाथ! 'धर्मदेशक' कहे।
नमत मिले निजरूप, जजत सर्वसुख संपदा।।101।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मदेशकनामविभूषिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'शुभंयु' आप, त्रिभुवन में मंगल करो।
हरो मोहसंताप, जँजू नित्य गुण गायके।।102।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुभंयुनामविभूषिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवनधि सुख विलसंत, 'सुखसाद्भूत' प्रसिद्ध हो।
निजसुख मिले अनंत, पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय के।।103।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुखसाद्भूतनामविभूषिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्यराशि' भगवंत, श्रेष्ठ पुण्य फल रूप हो।
जजत मिले भव अंत, शिरोरोग सब दूर हों।।104।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यराशिनामविभूषिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म जरा मृति रोग, शून्य 'अनामय' आप हो।
मिटें हृदय के रोग, पूर्ण स्वास्थ्य हो पूजते।।105।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनामयनामविभूषिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मपाल' भगवान् धर्मतीर्थ कर्ता तुम्हीं।
जजूँ सिद्ध गुणखान, रक्तचाप व्याधी नशे।।106।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपालनामविभूषिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगत्पाल' जिनदेव, त्रिभुवन गुरु जगपूज्य हो।
नमत करूँ भवछेव, शिवलक्ष्मी पाऊँ तुरत।।107।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पालनामविभूषिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्मपरमसाम्राज्य', उसके स्वामी आप ही।
मिले स्वात्म साम्राज्य, जजूँ अर्घ्य ले भक्ति से।।108।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मसाम्राज्यनायकनामविभूषिताय श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य - शंभुछंद –

दिवभाषापति से ले करके, श्रीधर्मसाम्राज्यनायक तक।
इक शतक आठ मंत्र जपते, शत खंड खंड हो जावें अघ।।
मैं अतिशय भक्ती श्रद्धा से, तुम नाम मंत्र को नित पूजूँ।
निज आतम अमृतरस पीकर, सब जन्म मरण दुख से छूटूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं दिव्यभाषापत्यादिअष्टोत्तरशतनाममंत्रविभूषिताय श्रीशांतिनाथ-तीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–जाप्य–

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथ–कुंथुनाथ–अरनाथतीर्थंकरेभ्यो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंकरचक्रवर्तिकामदेवपदसमन्वितश्रीशांतिनाथ–कुंथुनाथ–अरनाथेभ्यो नमः।

(दोनों में से कोई भी एक मंत्र 108 बार या 9 बार सुगंधित पुष्पों से या लवंग से या पीले चावल से जपें।)

जयमाला

-दोहा-

अति अद्भुत लक्ष्मी धरें, समवसरण प्रभु आप।
तुम धुनि सुन भववृन्द नित, हरें सकल संताप।।1।।

-शंभु छंद-

जय शान्तिनाथ प्रभु का वैभव, अन्तर का अनुपम गुणमय है।
जो दर्श ज्ञान सुख वीर्य रूप, आनन्त्य चतुष्टय निधिमय है।।
बाहर का वैभव समवसरण, जिसमें असंख्य रचना मानीं।
जब गणधर भी वर्णन करते, थक जाते मनपर्यय ज्ञानी।।2।।

यह समवसरण की दिव्य भूमि, इक हाथ उपरि पृथ्वी तल से।
द्वादश योजन उत्कृष्ट कही, इक योजन हो घटते क्रम से।।

यह भूमि कमल आकार कही, जो इन्द्रनीलमणि निर्मित है।
है गंधकुटी इस मध्य सही, जो कमल कर्णिका सदृश है।।3।।

पंकज के दल सम बाह्य भूमि, जो अनुपम शोभा धारे है।
इस समवसरण का बाह्य भाग, जो अनुपम शोभा धारे है।।
सब बीस हजार हाथ ऊँचा, यह समवसरण अति शोभा है।
एकेक हाथ ऊँची सीढ़ी, सब बीस हजार प्रमित शोभे।।4।।

पंगू अन्धे रोगी बालक, औ वृद्ध सभी जन चढ़ जाते।
अंतर्मुहूर्त के भीतर ही, यह अतिशय जिन आगम गाते।।
इसमें शुभ चार दिशाओं में, अति विस्तृत महावीथियाँ हैं।
वीथी में मानस्तम्भ कहे, जिनकी कलधौत पीठिका हैं।।5।।

इक योजन से कुछ अधिक तुँग, बारह योजन से दिखते हैं।
इनमें हैं दो हजार पहलू, स्फटिक मणी के चमके हैं।।
उनमें चारों दिश में ऊपर, सिद्धों की प्रतिमाएँ राजें।
मानस्तम्भों की सीढ़ी पर लक्ष्मी की मूर्ति अतुल राजें।।6।।

ये अस्सी कोशों तक सचमुच, अपना प्रकाश फैलाते हैं।
जो इनका दर्शन करते हैं, वे निज अभिमान गलाते हैं।।
मानस्तम्भों के चारों दिश, जल पूरित स्वच्छ सरोवर हैं।
जिनमें अति सुन्दर कमल खिले, हंसादि रवों से मनहर हैं।।7।।

ये प्रभु का सन्निध पा करके, ही मान गलित कर पाते हैं।
अतएव सभी अतिशय भगवन्! तेरा ही गुरुजन गाते हैं।।
छत्तीस गणधर चक्रायुधादि, बासठ हजार मुनिवर ज्ञानी।
गणिनी हरिषेणी माता थीं, आर्यिकाओं में प्रधान मानी।।8।।

सब साठ हजार व तीन शतक, संयतिकायें गुरुगुण भक्ता।
दो लाख सुश्रावक चार लाख, श्राविकायें वहां सद्व्रतयुक्ता।।
मैं भी प्रभु तुम सन्निध पाकर, संपूर्ण कषायों को नाशूँ।
प्रभु ऐसा वह दिन कब आवे, जब निज में निज को परकाशूँ।।9।।

जिननाथ! कामना पूर्ण करो, जिन चरणों में आश्रय देवो।
जब तक नहिं मुक्ति मिले तुझको, तब तक ही शरण मुझे लेवो।।
तब तक तुम चरण कमल मेरे, मन में नित स्थिर हो जावें।
जब तक नहिं केवल 'ज्ञानमती' तब तक मम मन तुम पद ध्यावें।।10।।

–दोहा–

तीर्थंकर गुणरत्न को, गिनत न पावें पार।
तीन रत्न के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो भाक्तिकजन तीर्थंकरत्रय–विधान भक्ती से करते हैं।
श्री शांतिनाथ श्री कुंथुनाथ, अरनाथ प्रभू को यजते हैं।।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सब रोग शोक भय हरते हैं।
नवनिधि ऋद्धी सिद्धी पाकर, कैवल्य ज्ञानमति लभते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. ३

श्री कुंथुनाथ जिनपूजा

–दोहा–

परमपुरुष परमातमा, परमानन्द स्वरूप।
आह्वानन कर मैं जजूँ, कुंथुनाथ शिवभूप।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक –बसंततिलका छंद–

गंगानदी जल लिये त्रय धार देऊँ।
स्वात्मैक शुद्ध करना बस एक हेतू।।
श्री कुंथुनाथ पद पंकज को जजूँ मैं।
छूटूँ अनंत भव संकट से सदा जो।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर केशर घिसा कर शुद्ध लाया।
संसार ताप शम हेतु तुम्हें चढ़ाऊँ।।श्री कुंथु.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शाली अखंड सित धौत सुथाल भरके।
अक्षय अखंड पद हेतु तुम्हें चढ़ाऊँ।।श्री कुंथु.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला गुलाब अरविंद सुचंपकादी।
कामारिजित पद सरोरुह में चढ़ाऊँ।।श्री कुंथु.।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लड्डू पुआ अंदरसा पकवान नाना।
क्षुध रोग नाश हित नेवज को चढ़ाऊँ।।श्री कुंथु.।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर दीप लव ज्योति करें दशोंदिक्।
मैं आरती कर प्रभो निज मोह नाशूँ।।श्री कुंथु.।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरू सुरभि धूप जले अगनि में।
संपूर्ण पाप कर भस्म उड़े गगन में।।श्री कुंथु.।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम फल अमृतसम मंगाके।
अर्पूं तुम्हें सुफल हेतु अभीष्ट पूरो।।श्री कुंथु.।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीरादि अष्ट शुभद्रव्य सुथाल भरके।
पूजूँ तुम्हें सकल ''ज्ञानमती'' सदा हो।।श्री कुंथु.।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

कनकभृंग में नीर, सुरभित कमलपराग से।
मिले भवोदधितीर, शांतीधारा मैं करूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा।

वकुल गुलाब सुपुष्प, सुरभित करते दश दिशा।
पुष्पांजलि से पूज, पाऊँ आतम निधि अमल।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–दोहा –

श्रावण वदि दशमी तिथी, गर्भ बसे भगवान।
इंद्र गर्भ मंगल किया, मैं पूजूँ इत आन।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावणकृष्णादशम्यां श्रीकुंथुनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकम सित वैशाख की, जन्में कुंथुजिनेश।
किया इंद्र वैभव सहित, सुरगिरि पर अभिषेक।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखशुक्लाप्रतिपत्तिथौ श्रीकुंथुनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित एकम वैशाख की, दीक्षा ली जिनदेव।
इन्द्र सभी मिल आय के, किया कुंथु पद सेव।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखशुक्लाप्रतिपत्तिथौ श्रीकुंथुनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ल तिथि तीज में, प्रगटा केवलज्ञान।
समवसरण में कुंथुजिन, करें भव्य कल्याण।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रशुक्लातृतीयायां श्रीकुंथुनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

सित एकम वैशाख की, तिथि निर्वाण पवित्र।
कुंथुनाथ के पदकमल, जजतें बनूँ पवित्र।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाखशुक्लाप्रतिपत्तिथौ श्रीकुंथुनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

श्री तीर्थंकर कुंथु जिन, करुणा के अवतार।
पूर्ण अर्घ्य से जजत ही, मिले सौख्य भंडार।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

तृतीय वलय में अथ 108 अर्घ्य

-दोहा-

तीर्थंकर की अर्चना, भरे स्वात्म विज्ञान।
रोक शोक दुख वंचना, करके करे महान।।1।।

।।अथ मंडलस्योपरि तृतीयवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

चौपाई (15 मात्रा)

'महाशोकध्वज' आप जिनेश।
वृक्ष अशोक चिह्न परमेश।।
आप नाम सब सुख की खान।
पूजत मिलता आत्म निधान।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाशोकध्वजनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

नाथ! 'अशोक' शोक से हीन।
आप भक्त हों शोक विहीन।।आप.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं अशोकनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'क' नाम आत्म आधार।
सब भक्तों को सुखदातार।।आप.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं 'क' नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग मोक्ष की सृष्टि करंत।
'स्रष्टा' नाम सुरेन्द्र यजंत।।आप.।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्रष्टानामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पद्मविष्टर' तुम नाम।
आसन स्वर्णकमल तुम स्वामि।।आप.।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मविष्टरनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'पद्मेश' आप विख्यात।
लक्ष्मी के स्वामी हो नाथ।।आप.।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मेशनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'पद्मसंभूति' जिनेश।
चरण कमल तल कमल हमेश।।आप.।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मसंभूतिनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

'पद्मनाभि' पंकजसम नाभि।
वंदत मिटती सर्व उपाधि।।आप.।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मनाभिनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'अनुत्तर' तुम सम अन्य।
श्रेष्ठ नहीं प्रभु तुम ही धन्य।।
आप नाम सब सुख की खान।
पूजत मिलता आत्म निधान।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनुत्तरनामसमन्विताय श्री कुंथुंनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पद्मयोनि' माता का गर्भ।
पद्माकृति से तुम उत्पत्ति।।आप.।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं पद्मयोनिनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगद्योनि' धर्ममय जगत्।
उसकी उत्पत्ति कारण जिनप।।आप.।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगद्योनिनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'इत्य' आप की प्राप्ती हेतु।
भविजन तप तपते बहुभेद।।आप.।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं इत्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'स्तुत्य' इन्द्र मुनि आदि।
सबकी स्तुति योग्य अबाधि।।आप.।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्तुत्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'स्तुतीश्वर' कहे।
स्तुति के ईश्वर ही रहें।।आप.।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्तुतीश्वरनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्तवनार्ह' स्तुति के योग्य।
आप समान न अन्य मनोज्ञ।।आप.।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्तवनार्हनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हृषीकेश' इंद्रिय के ईश।
विजितेंद्रिय हो सर्व अधीश।।आप.।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं हृषीकेशनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'जितजेय' अनूप।
जीता मोह आदि अरि भूप।।आप.।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं जितजेयनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करने योग्य क्रियायें सर्व।
पूर्ण किया 'कृतक्रिय' नामार्ह।।आप.।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रियनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह गण के स्वामी आप।
अतः 'गणाधिप' हो निष्पाप।।आप.।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं गणाधिपनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वजनों में तुम ही श्रेष्ठ।
अतः जगत में हो 'गणज्येष्ठ'।।आप.।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं गणज्येष्ठनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणना योग्य आप ही 'गण्य'।
चौरासी लख गुण युत धन्य।।आप.।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं गण्यनामसमन्विताय श्री कुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण पवित्र आप ही 'पुण्य'।
सबको पावन करें सुपुण्य।।आप.।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब गण शिवपथ में ले जाव।
'गणाग्रणी' प्रभु आप कहाव।।आप.।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं गणाग्रणीनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानाद्यनंत गुण की खान।
नाथ 'गुणाकर' आप महान।।आप.।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणाकरनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लाख चुरासी गुण की वार्धि।
'गुणाम्भोधि' हरते भव व्याधि।।आप.।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणाम्भोधिनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-भरतरी

नाथ! 'गुणज्ञ' कहावते, गुणमणि ज्ञाता आप।
सर्वदोष मुझ हान के, करो शीघ्र निष्पाप।।
नाम मंत्र मैं नित जपूँ, हरो सकल भवव्याधि।
स्वपर भेद विज्ञानयुत, दीजे अंत समाधि।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणज्ञनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुणनायक' चौरासी लख, गुणमणि के हो नाथ।
रोग शोक दुखनाश कर, गुण से करो सनाथ।।नाम.।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणनायकनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्त्व आदि गुण आदरा, 'गुणादरी' तुम नाम।
क्रोध मोह सब नाशिये, झुक झुक करूँ प्रणाम।।नाम.।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणादरिन्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रजतम आदि विभावगुण, नाश किया प्रभु आप।
अतः 'गुणोच्छेदी' भये, करो मुझे निष्पाप।।नाम.।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणोच्छेदिन्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

वैभाविक गुण हीन हो, 'निर्गुण' कहें मुनीश।
या निश्चित ज्ञानादि गुण, धरते निर्गुण ईश।।नाम.।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्गुणनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पुण्यगी' पुण्यमय, पावनवाणी आप।
मुझ वाणी पावन करो हरो सकल भव ताप।।नाम.।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यगीर्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणयुत और प्रधान हो, अतः नाम 'गुण' आप।
भव्य आपको ही गुने, हरो सकल यम ताप।।नाम.।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शरण्य' हो जगत में, शरणागत प्रतिपाल।
सब दुख मथन करो सदा, नमूँ नमूँ नत भाल।।नाम.।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं शरण्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्यवाक्' प्रभु तुम वचन, भरें पुण्य भण्डार।
आतम निधि को देय के, करें मृत्यु संहार।।नाम.।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यवाक्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पूत' आप पावन परम, भक्तन करो पवित्र।
अंतर आत्म उपाय से, लहूँ परमपद शीघ्र।।नाम.।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं पूतनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'वरेण्य' मुक्तीरमा, वरण किया स्वयमेव।
सबमें श्रेष्ठ तुम्हीं कहे, करो सकल दुख छेव।।नाम.।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं वरेण्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पुण्यनायक' तुम्हीं, सकल पुण्य के ईश।
पुण्यसंपदा देउ मुझ, नमूँ नमूँ नत शीश।।नाम.।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यनायकनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अगण्य' गणना नहीं, माप रहित गुण आप।
मेरे अनवधि गुण मुझे, देय हरो संताप।।नाम.।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं अगण्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पुण्यधी' पावना, बुद्धि आपकी शुद्ध।
मुझ मन पावन कीजिये, होय आतमा शुद्ध।।नाम.।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यधीनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुण्य' सर्वगण हित किया, गुण अनंत युत आप।
सर्वगुणों से पूर्ण कर, हरो दोष दुख पाप।।नाम.।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुण्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'पुण्यकृत्' आपही, किया पुण्य हरपाप।
सब जन मन पावन किया, हो पवित्र निष्पाप।।नाम.।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यकृत्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पुण्यशासन' वहाँ, तुम शासन-मत शुद्ध।
आतम अनुशासन करूँ, देवो ऐसी बुद्धि।।नाम.।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यशासननामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धर्माराम' तुम्हीं प्रभो! धर्मोद्यान विशाल।
छाया फल दे स्वर्ग शिव, हरिये ताप दयालु।।
नाम मंत्र मैं नित जपूँ, हरो सकल भवव्याधि।
स्वपर भेद विज्ञानयुत, दीजे अंत समाधि।।43।।

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मारामनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप प्रभो! 'गुणग्राम' हैं, मूलोत्तर गुण युक्त।
इंद्रियगांव उजाड़के, आप हुये जग मुक्त।।नाम.।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुणग्रामनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्यापुण्यनिरोधका', शुद्ध आत्म में लीन।
पुण्य पाप को रोक के, भये मुक्ति आधीन।।नाम.।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यापुण्यनिरोधकनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पापापेत' तुम्हीं प्रभो! पाप रहित निष्पाप।
मेरे सब संकट हरो, पुण्य भरो हत पाप।।नाम.।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं पापापेतनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'विपापात्मा' कहे, पाप हीन अतिशुद्ध।
मेरे सब अघ क्षय करो, होऊँ सिद्ध विशुद्ध।।नाम.।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं विपापात्मन्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

नाथ! 'विपाप्मा' कर्म अघ, चूर किया भगवान्।
तुम भक्ती से भव्यजन, बने सकल धनवान।।नाम.।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं विपाप्मान्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव नोकर्ममल कल्मष धोकर शुद्ध।
प्रभो! 'वीतकल्मष' तुम्हीं मुझे करो झट शुद्ध।।नाम.।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं वीतकल्मषनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'निर्द्वंद्व' हैं, द्वंद्व-कलह से मुक्त।
सर्व परिग्रह हीन हैं, करो हमें भव मुक्त।।नाम.।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्द्वंद्वनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग-वंदों दिगंबर गुरू.....

प्रभु आप 'निर्मद' आठ विध मद रहित पूज्य महान।
तुम भक्त अतिशय स्वाभिमानी आत्म गौरववान।।
तुम नाम की अर्चा करूँ मैं स्वात्म संपति हेतु।
बस पूरिये इक आश मेरी आप ही भव सेतु।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मदनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'शांत' क्रोधादी कषायें नष्ट कर दी आप।
तुम पद कमल की भक्ति भी करती भविक मन शांत।।तुम.।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं शांतनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्मोह' प्रभु सब मोह अरु अज्ञान से भी दूर।
तुम भक्त का चारित्र दर्शन मोह करते दूर।।तुम.।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्मोहनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'निरुपद्रव' उपद्रव, उपसरग से हीन।
तुम भक्त भी जड़मूल से करते उपद्रव क्षीण।।तुम.।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरुपद्रवनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दिव्यचक्षु नेत्रस्पंदन रहित विख्यात।
इससे कहें मुनि 'निर्निमेष' सुपाय ज्ञानविकास।।तुम.।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्निमेषनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निराहार' न आपको है कभी कवलाहार।
तुम भक्त भी आहार विरहित होंय निर्नीहार।।तुम.।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं निराहारनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्क्रिय' प्रभो! सामायिकादि क्रियाओं से शून्य।
संसार की सबही क्रियाओं से रहित सुखपूर्ण।।तुम.।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्क्रियनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'निरुपप्लव' विघन बाधारहित भगवान।
तुम पाद अर्चन से सभी निर्विघ्न होते काम।।तुम.।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरुपप्लवनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निष्कलंक' कलंक-अपवादादि अघ से हीन।
संपूर्ण कर्मकलंक नाशा विश्वज्ञान प्रवीण।।
तुम नाम की अर्चा करूँ मैं स्वात्म संपति हेतु।
बस पूरिये इक आश मेरी आप ही भव सेतु।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्कलंकनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'निरस्तैना' सर्व एनस-पाप से हो दूर।
तुम भक्त भी मोहारि अघ नाशन करें बन शूर।।तुम.।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरस्तैनस्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निर्धूतआगस्' आप हैं अपराध अघ से हीन।
हे नाथ मुझ अपराध नाशो करो ज्ञान अधीन।।तुम.।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं निर्धूतागस्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

प्रभु 'निरास्रव' संपूर्ण आस्रव रोक संवररूप।
मुझ पाप आस्रव नाशिये हो शुद्ध आतमरूप।।तुम.।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरास्रवनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! आप 'विशाल' अनुपम शांति देते नित्य।
सबसे महान-विशाल मानें नमूँ मैं धर प्रीत्य।।तुम.।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं विशालनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'विपुलज्योति' समस्त लोकालोकव्यापक ज्ञान।
तुम ज्ञानज्योति से हनें भवि मोह ध्वांत महान्।।तुम.।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं विपुलज्योतिर्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा

प्रभु 'अतुल' तुलनारहित जग में मुक्तिलक्षमीनाथ।
नहिं तोल सकते गुण तुम्हारे सर्व गण के नाथ।।तुम.।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतुलनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! आप 'अचिन्त्यवैभव' विभव त्रिभुवन मान्य।
मन से न सुरपति योगिगण भी सोच सकते साम्य।।तुम.।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यवैभवनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह

भगवन्! 'सुसंवृत' आप सम्यक पूर्ण संवर युक्त।
तुम पदकमल की भक्ति से हों भव्य आस्रव मुक्त।।तुम.।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुसंवृतनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'सुगुप्तात्मा' आप आत्मा कर्मअरि से गुप्त।
तुम भक्त भी मन वचन कायिक गुप्ति से हों युक्त।।तुम.।।68।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुगुप्तात्मन्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

प्रभु 'सुबुध' अच्छी तरह त्रिभुवन जानते हैं आप।
मुझको निजातम तत्त्व का सुखबोध देवो आज।।तुम.।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुबुधनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'सुनयतत्त्ववित्' सापेक्ष नय का मर्म।
जानों तुम्हीं बतला दिया जिन अनेकांत सुधर्म।।तुम.।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं सुनयतत्त्ववित्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा

प्रभु 'एकविद्य' सुएक केवलज्ञान विद्या युक्त।
मतिश्रुत अवधि मनपर्ययी चउज्ञान विद्या मुक्त।।तुम.।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं एकविद्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'महाविद्य' महान् केवलज्ञान विद्याधार।
अठरा महाभाषा लघु तुम सात सौ ध्वनि कार।।तुम.।।72।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाविद्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मुनि' आप त्रिभुवन चराचर को जानते प्रत्यक्ष।
मैं आपका वंदन करूँ हो स्वात्मज्ञान प्रत्यक्ष।।तुम.।।73।।

ॐ ह्रीं अर्हं मुनिनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'परिवृढ' सब गुणों का वर्धन किया जिनराज।
तुम वन्दना से सर्व मेरे गुण प्रगट हो आज।।तुम.।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं परिवृढनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'पती' प्राणीवर्ग को संसार दुख से काढ़।
रक्षा करो त्रिभुवनपती सुर नमें रुचिधर गाढ़।।तुम.।।75।।

ॐ ह्रीं अर्हं पतिनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वसंततिलका छंद

कैवल्यज्ञानमय बुद्धि धरंत 'धीश'।
मेरे सुज्ञानमय ज्योति करो मुनीश।।
हे कुंथुनाथ! तुम मंत्र सदा जपूँ मैं।
स्वात्मा पियूष रस कंद सदा भजूँ मैं।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं धीशनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विद्यानिधी' स्वपर शास्त्र सुज्ञानरूपा।
भंडार आप उसके निधि हैं अनूपा।।हे कुंथुनाथ।।77।।

ॐ ह्रीं अर्हं विद्यानिधिनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्य की सकल वस्तु प्रतक्ष जानो।
'साक्षी' कहें सुरपती प्रभु ज्ञान भानू।।हे कुंथुनाथ।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हं साक्षिन्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्षैक मार्ग प्रकटी करते 'विनेता'।
पादाब्ज में नित नमूँ मुझ विघ्न नाशो।।हे कुंथुनाथ।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हं विनेतृनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यु विनाश 'विहितांतक' नाम धारा।
मेरे समस्त दुख रोष मिटाय दीजे।।हे कुंथुनाथ।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हं विहितांतकनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

रक्षा करो दुर्गती दुख से बचाते।
साधू 'पिता' कह रहे सुख के जनक हो।।हे कुंथुनाथ।।81।।

ॐ ह्रीं अर्हं पितृनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रैलोक्य के गुरू कहें सबके सुत्राता।
इससे 'पितामह' तुम्हें कहते गणीशा।।हे कुंथुनाथ।।82।।

ॐ ह्रीं अर्हं पितामहनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रक्षा करो नित भवोदधि दुःख से ही।
'पाता' कहें सुरपती मुझको उबारो।।हे कुंथुनाथ।।83।।

ॐ ह्रीं अर्हं पातृनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा पवित्र कर ली निज की तुम्हीं ने।
इससे 'पवित्र' मुझको भि पवित्र कर दो।।हे कुंथुनाथ।।84।।
ॐ ह्रीं अर्हं पवित्रनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण भव्य जन को सुपवित्र करते।
'पावन' कहें मुनि तुम्हें मुझ पाप नाशो।।हे कुंथुनाथ।।85।।
ॐ ह्रीं अर्हं पावननामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण भव्य तप कर प्रभु आप जैसा।
होना चहें 'गति' अतः सबको शरण भी।।हे कुंथुनाथ।।86।।
ॐ ह्रीं अर्हं गतिनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'त्राता' समस्त जन रक्षक भी तुम्हीं हो।
पादाब्ज आश्रय लिया अतएव मैंने।।हे कुंथुनाथ।।87।।
ॐ ह्रीं अर्हं त्रातृनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो वैद्य आप भव रोग विनाश कर्ता।
इससे 'भिषग्वर' तुम्हीं मुझ व्याधि नाशो।।हे कुंथुनाथ।।88।।
ॐ ह्रीं अर्हं भिषग्वरनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'वर्य' आप जग में अतिश्रेष्ठ माने।
मुक्तीरमा तुम वरण अभिलाष धारे।।हे कुंथुनाथ।।89।।
ॐ ह्रीं अर्हं वर्यनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छानुकूल सब वस्तु प्रदान करते।
इससे 'वरद' सुरग मोक्ष तुम्हीं प्रदाता।।हे कुंथुनाथ।।90।।
ॐ ह्रीं अर्हं वरदनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादि से 'परम' आप त्रिलोक लक्ष्मी।
धारें अतः जन सभी तुम पास आते।।हे कुंथुनाथ।।91।।
ॐ ह्रीं अर्हं परमनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा व अन्य जन को भि पवित्र करते।
इससे 'पुमान्' तुम ही जग के हितैषी।।हे कुंथुनाथ।।92।।
ॐ ह्रीं अर्हं पुमान्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! आप 'कवि' द्वादश अंग वर्णे।
सद्धर्म के कथन में अतिशायि पटुता।।
हे कुंथुनाथ! तुम मंत्र सदा जपूँ मैं।
स्वात्मा पियूष रस कंद सदा भजूँ मैं।।93।।
ॐ ह्रीं अर्हं कविनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना आदि नांत अतएव 'पुराण पुरुष'।
आत्मा पुराण पुरुषा प्रभु आपकी है।।हे कुंथुनाथ।।94।।
ॐ ह्रीं अर्हं पुराणपुरुषनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादि से अतिशयी प्रभु वृद्ध ही हो।
इस हेतु नाम तुम 'वर्षीयान्' पाया।।हे कुंथुनाथ।।95।।
ॐ ह्रीं अर्हं वर्षीयान्नामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुश्रेष्ठ हो 'ऋषभ' नाम धरा तुम्हीं ने।
इन्द्रादि वंद्य सुरपूजित सौख्य देवो।।हे कुंथुनाथ।।96।।
ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे देव! आप 'पुरु' हैं युग के विधाता।
संपूर्ण द्वादश गणों मधि मुख्य ही हो।।हे कुंथुनाथ।।97।।
ॐ ह्रीं अर्हं पुरुनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्पत्ति है प्रतिष्ठा गुण की तुम्हीं से।
इससे तुम्हीं 'प्रतिष्ठाप्रसवादि' नामा।।हे कुंथुनाथ।।98।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रतिष्ठाप्रसवनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण कार्य हित कारण 'हेतु' आप।
संपूर्ण ज्ञानमय नाथ! सुज्ञानदाता।।हे कुंथुनाथ।।99।।
ॐ ह्रीं अर्हं हेतुनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो एकमात्र गुरू सर्व त्रिलोक में भी।
अतएव आप 'भुवनैकपितामहा' हो।।हे कुंथुनाथ।।100।।
ॐ ह्रीं अर्हं भुवनैकपितामहनामसमन्विताय श्रीकुंथुनाथाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पद्धड़ी छंद–

तुम प्रगट प्रगट अतिशय महात्म्य।
हरि हर ब्रह्मा नहिं करें साम्य।।
जिन कुंथु निरंजन निर्विकार।
मैं नमूँ सौख्य पाऊँ अपार।।101।।

ॐ ह्रीं अर्हं उदितोदितमाहात्म्यनामविभूषिताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सो रहे जगत् व्यवहार हीन, जगते निज में प्रभु स्वात्म लीन।
तुम इष्ट अनिष्ट विभाव दूर, पूजत ही पाऊँ स्वात्मपूर।।102।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्यवहारसुषुप्तनामविभूषिताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तरगुण हैं चौरासि लाख, इनसे पाया निज पूर्ण राज्य।
मिटते अनिष्ट संयोग शोक, पूजन करते जन मन अशोक।।103।।

ॐ ह्रीं अर्हं चतुरशीतिलक्षगुणनामविभूषिताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सिद्धिपुरी के पथिक आप,श्री कुंथुनाथ पाया स्वराज्य।
दुख इष्ट वियोगादिक न होंय, पूजत ही निजपद प्राप्त होय।।104।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धिपुरीपान्थनामविभूषिताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शंभु छंद–

अर्हत्प्रभु योग निरोध किया, तब समवसरण भी विघट गया।
दिव्यध्वनि खिरनी बंद हुई, वच काय योग संकोच लिया।।
कर्मारि अघाती नष्ट हुये , शिवधाम मिला प्रभु सिद्ध बने।
पूजत ही वचन सिद्धि होती, प्रभु ध्याते आत्मा शुद्ध बने।।105।।

ॐ ह्रीं अर्हं संह्लाध्वनिगुणविभूषितायश्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगों से ईर्यापथ आस्रव, वह किट्टि लेप है अर्हत् को।
व्युपरत क्रियनिवृती शुक्लध्यान, ध्याया तब हना अघाती को।।

प्रभु योग किट्टि निर्लेपन में, उद्यत हो शिवपद प्राप्त किया।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर पूजत ही, शुद्धात्म ज्ञान को प्राप्त किया।।106।।

ॐ ह्रीं अर्हं योगकिट्टिनिर्लेपनउद्यतनामविभूषिताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई–

टूट रहे कर्मो के फंद, हुये अयोगी जिन निर्द्वंद।
सिद्धधाम में काल अनंत, निवसें जजूँ कुंथु भगवंत।।107।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रुटत्कर्मपाशनामविभूषिताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमनिर्जरा तत्त्व धरंत, जिन अयोगि हों सिद्ध तुरंत।
अशुभ कर्म निर्जीरण हेतु, नमूँ कुंथुप्रभु भवदधि सेतु।।108।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमनिर्जरनामविभूषिताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्यं–

प्रभु महाशोक ध्वज आदि नाम, इक शतक आठ धारक प्रभु हो।
सौ इन्द्रों से वंदित गणधर, मुनिगण से वंदित संस्तुत हो।।
प्रभु सात परमस्थान हेतु, मैं नितप्रति तुम गुण को गाऊँ।
जब तक नहिं मुक्ति मिले मुझको, तुमपद में ही मैं रम जाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाशोकध्वजनामादि अष्टोत्तरशतनाममंत्रविभूषिताय श्रीकुंथुनाथतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–जाप्य–

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथ–कुंथुनाथ–अरनाथतीर्थंकरेभ्यो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंकरचक्रवर्तिकामदेवपदसमन्वितश्रीशांतिनाथ–कुंथुनाथ–अरनाथेभ्यो नमः।

(दोनों में से कोई भी एक मंत्र 108 बार या 9 बार सुगंधित पुष्पों से या लवंग से या पीले चावल से जपें।)

जयमाला

–दोहा–

लोकोत्तर फलप्रद तुम्हीं, कल्पवृक्ष जिनदेव।
कुंथुनाथ तुमको नमूँ, करूँ भक्ति भर सेव।।1।।

–त्रिभंगी छंद–

पैंतिस गणधर मुनि साठ सहस, भाविता आर्यिका गणिनी थीं।
सब साठ सहस त्रय शतपचास, संयतिकायें अघ हरणी थीं।।
श्रावक दो लाख श्राविकाएँ, त्रय लाख चिन्ह बकरा शोभे।
आयू पंचानवे सहस वर्ष, पैंतिस धनु तनु स्वर्णिम दीपे।।2।।

–गीता छंद–

जय कुंथुनाथ जिनेंद्र तीर्थेश्वर जगत विख्यात हो।
जय जय अखिल संपत्ति के, भर्ता भविकजन नाथ हो।।
लोकांत में जा राजते, त्रैलोक्य के चूड़ामणी।
जय जय सकल जग में तुम्हीं, हो ख्यात प्रभु चिंतामणी।।3।।

एकेन्द्रियादिक योनियों में, नाथ! मैं रुलता रहा।
चारों गती में ही अनादी, से प्रभो! भ्रमता रहा।।
मैं द्रव्य क्षेत्र रु काल भव, औ भाव परिवर्तन किये।
इनमें भ्रमण से ही अनंतानंत काल बिता दिये।।4।।

बहुजन्म संचित पुण्य से, दुर्लभ मनुज योनी मिली।
तब बालपन में जड़ सदृश, सज्ज्ञान कलिका ना खिली।।
बहुपुण्य के संयोग से, प्रभु आपका दर्शन मिला।
बहिरातमा औ अंतरात्मा, का स्वयं परिचय मिला।।5।।

तुम सकल परमात्मा बने, जब घातिया आहत हुए।
उत्तम अतीन्द्रिय सौख्य पा, प्रत्यक्ष ज्ञानी तब हुए।।
फिर शेष कर्म विनाश करके, निकल परमात्मा बने।
कल–देहवर्जित निकल अकल, स्वरूप शुद्धात्मा बने।।6।।

हे नाथ! बहिरात्मा दशा को, छोड़ अंतर आतमा।
होकर सतत ध्याऊँ तुम्हें, हो जाऊँ मैं परमात्मा।।
संसार का संसरण तज, त्रिभुवन शिखर पे जा बसूँ।
निज के अनंतानंत गुणमणि, पाय निज में ही बसूँ।।7।।

–दोहा–

कामदेव चक्रीश प्रभु, सत्रहवें तीर्थेश।
केवल ''ज्ञानमती'' मुझे, दो त्रिभुवन परमेश।।8।।
सूरसेन नृप के तनय, श्रीकांता के लाल।
जजें तुम्हें जो वे स्वयं, होते मालामाल।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकुंथुनाथजिनेन्द्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो भाक्तिकजन तीर्थंकरत्रय–विधान भक्ती से करते हैं।
श्री शांतिनाथ श्री कुंथुनाथ, अरनाथ प्रभू को यजते हैं।।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सब रोग शोक भय हरते हैं।
नवनिधि ऋद्धी सिद्धी पाकर, कैवल्य ज्ञानमति लभते हैं।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. ४

श्री अरनाथ तीर्थंकर पूजा

–दोहा–

तीर्थंकर अरनाथ! तुम, चक्ररत्न के ईश।
ध्यान चक्र से मृत्यु को, मारा त्रिभुवन ईश।।1।।
आह्वानन विधि से यहाँ, मैं पूजूँ धर प्रीत।
रोग शोक दुःख नाशकर, लहूँ स्वात्म नवनीत।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअरनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीअरनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक –अडिल्ल छंद –

सिंधुनदी को नीर, स्वर्णझारी भरूँ।
मिले भवोदधितीर, तीन धारा करूँ।।
श्री अरनाथ जिनेन्द्र, जजूँ मन लाय के।
समतारस पीयूष, चखूँ तुम पाय के।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअरनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

केशर चंदन घिसा, कटोरी में भरा।
रागदाह हरने को, चर्चूं सुखकरा।।श्री अर.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअरनाथतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्रकिरण सम उज्ज्वल, अक्षत ले लिये।
तुम आगे मैं पुंज, धरूँ सुख के लिए।।श्री अर.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअरनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा जुही गुलाब, पुष्प सुरभित लिये।
भव विजयी के चरणों, में अर्पण किये।।श्री अर.।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअरनाथतीर्थंकराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मालपुआ रसगुल्ला, बहु मिष्टान्न ले।
क्षुधारोग हर हेतु, चढ़ाऊँ नित भले।।

श्री अरनाथ जिनेन्द्र, जजूँ मन लाय के।
समतारस पीयूष, चखूँ तुम पाय के।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअरनाथतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीपक ले करूँ, आरती नाथ की।
मोहध्वांत हर लहूँ, भारती ज्ञान की।।श्री अर.।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअरनाथतीर्थंकराय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर तगर वर धूप, अग्नि में खेवते।
कर्म दूर हो नाथ! चरण युग सेवते।।श्री अर.।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअरनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीफल पूग बदाम, आम केला लिये।
शिवफल हेतू तुम, पद में अर्पण किये।।श्री अर.।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअरनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत, आदिक वसु द्रव्य ले।
अर्घ चढ़ाऊँ ''ज्ञानमती'' निधियाँ मिलें।।श्री अर.।।9॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअरनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा –

अर जिन चरण सरोज, शांतीधारा मैं करूँ।
चउसंघ शांती हेत, शांतीधारा जगत में।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कमल केतकी पुष्प, सुरभित निजकर से चुने।
श्री जिनवर पदपद्म, पुष्पांजलि अर्पण करूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–सखी छंद –

फाल्गुन कृष्णा तृतिया में, प्रभु गर्भ निवास किया तें।
सुरपति ने उत्सव कीना, हम पूजें भवदुखहीना।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्णातृतीयायां श्रीअरनाथजिनगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर शुक्ला चौदस के, प्रभुजन्म लिया सुर हर्षे।
मेरू पर न्हवन हुआ है, इन्द्रों ने नृत्य किया है।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्षशुक्लाचतुर्दश्यां श्रीअरनाथजिनजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर सुदी दशमी तिथि में, दीक्षा धारी प्रभु वन में।
इंद्रों से पूजा पाई, हम पूजें मन हरषाई।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्षशुक्लादशम्यां श्रीअरनाथजिनदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदि बारस तिथि में, केवल रवि प्रकटा निज में।
बारह गण को उपदेशा, हम पूजें भक्ति समेता।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिकशुक्लाद्वादश्यां श्रीअरनाथजिनकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

शुभ चैत्र अमावस्या में, मुक्तिश्री परणी प्रभु ने।
इन्द्रों ने की प्रभु अर्चा, पूजन से निजसुख मिलता।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रकृष्णामावस्यायां श्रीअरनाथजिनमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

अरहनाथ की वंदना, करे कर्मअरि नाश।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, मिले सर्वगुण राशि।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअरनाथजिनपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

चतुर्थ वलय में अथ 108 अर्घ्य

-दोहा-

ज्ञान दर्श सुखवीर्यमय, गुण अनंत विलसंत।
सुमन चढ़ाकर पूजहूँ, हरूँ सकल जगफंद।।1।।

।।अथ मंडलस्योपरि चतुर्थवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

विष्णुपद–छंद

आप नाम 'श्रीवृक्षलक्षणा' इंद्र सदा गावें।
दिव्य अशोक वृक्ष इक योजन मणिमय दर्शावें।।
श्री अरप्रभु को मैं नित पूजूँ, भक्ती मन धरके।
पाऊँ निज गुण संपत्ती मैं, स्वपर भेद करके।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृक्षलक्षणनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंतलक्ष्मी प्रिया साथ में, आलिंगन करते।
सूक्ष्मरूप होने से भगवन् 'श्लक्ष्ण' नाम धरते।।श्री.।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्लक्ष्णनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट महाव्याकरण कुशल हो, सर्वशास्त्रकर्ता।
प्रभु आप 'लक्षण्य' नामधर सब लक्षण भर्ता।।श्री.।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं लक्षण्यनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शुभलक्षण' श्रीवृक्ष शंख पंकज स्वस्तिक आदी।
प्रातिहार्य मंगल सुद्रव्य शुभ लक्षण सौ अठ भी।।श्री.।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं शुभलक्षणनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'निरक्ष' इंद्रिय से विरहित सौख्य अतींद्रिय हैं।
इंद्रिय निग्रहकर जो ध्याते वे निज सुखमय हैं।।श्री.।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं निरक्षनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'पुण्डरीकाक्ष' कहाये नेत्र कमलसम हैं।
नासादृष्टि सौम्य छवि लखते नेत्र प्रफुल्लित हैं।।श्री.।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुण्डरीकाक्षनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुष्कल' आत्मगुणों से भगवन्! तुम परिपुष्ट हुये।
भक्तजनों का पोषण करते जो तुम शरण भये।।श्री.।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्कलनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू 'पुष्करेक्षण' पंकज दल सदृश नेत्र लम्बे।
निजमन कमल खिलाने हेतू भवि तुम अवलंबे।।श्री.।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं पुष्करेक्षणनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो 'सिद्धिया' स्वात्मलब्धि मुक्ती के दायक हो।
भक्तों की सब कार्यसिद्धि हित तुम ही लायक हो।।श्री.।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धियानामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'सिद्धसंकल्प' सर्व संकल्प सिद्ध कीना।
भक्तों के भी सकल मनोरथ पूरे कर दीना।।श्री.।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसंकल्पनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्धात्मा' प्रभु तुम आत्मा ने सिद्ध अवस्था ली।
सिद्ध शिला पर आप विराजे अनवधि गुणशाली।।श्री.।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धात्मानामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाम! 'सिद्धसाधन' शिवसाधन रत्नत्रय धारा।
जिनने आप चरण को पूजा उन्हें शीघ्र तारा।।श्री.।।12।।

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धसाधननामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञेयवस्तु सब जान लिया है नहीं शेष कुछ भी।
'बुद्धबोध्य' अतएव कहाये, लिया सर्वसुख भी।।श्री.।।13।।

ॐ ह्रीं अर्हं बुद्धबोध्यनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय गुण विभव प्रशंसित सब जग में प्रभु का।
'महाबोधि' अतएव आप ही हरो सर्व विपदा।।
श्री अरप्रभु को मैं नित पूजूँ, भक्ती मन धरके।
पाऊँ निज गुण संपत्ती मैं, स्वपर भेद करके।।14।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाबोधिनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम श्रेष्ठ अतिशायी पूजा ज्ञान लहा तुमने।
सदा गुणों से बढ़ते रहते 'वर्द्धमान' जग में।।श्री.।।15।।

ॐ ह्रीं अर्हं वर्द्धमाननामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बड़ी-बड़ी ऋद्धी के धारक आप 'महर्द्धिक' हो।
गणधर मुनिगण वंदित चरणा आप सौख्यप्रद हो।।श्री.।।16।।

ॐ ह्रीं अर्हं महर्द्धिकनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेद-चार अनुयोग ज्ञान के अंग-उपाय तुम्हीं।
अतः आप 'वेदांग' ज्ञानप्राप्ती के हेतु तुम्हीं।।श्री.।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं वेदांगनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेद-आत्मविद्या शरीर से भिन्न आतमा है।
इसके ज्ञाता भिन्न किया तनु अतः 'वेदविद्' हैं।।श्री.।।18।।

ॐ ह्रीं अर्हं वेदविद्नामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वेद्य' आप ऋषिगण के द्वारा ज्ञान योग्य माने।
स्वसंवेद्य ज्ञान वो पाते जो पूजन ठाने।।श्री.।।19।।

ॐ ह्रीं अर्हं वेद्यनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जातरूप' तुम जनमे जैसे रूप दिगंबर है।
प्रकृतरूप निर्दोष आपका भविजन सुखप्रद है।।श्री.।।20।।

ॐ ह्रीं अर्हं जातरूपनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्वानों में श्रेष्ठ 'विदांवर' आप पूर्णज्ञानी।
तुमपद पंकज भक्त शीघ्र ही वरते शिवरानी।।श्री.।।21।।

ॐ ह्रीं अर्हं विदांवरनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वेदवेद्य' प्रभु आगम से तुम जानन योग्य कहे।
केवलज्ञान से हि या प्रभु जानन योग्य रहे।।श्री.।।22।।

ॐ ह्रीं अर्हं वेदवेद्यनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वयंवेद्य' प्रभु स्वयं सुअनुभव गम्य आप ही हैं।
स्वयं स्वयं का अनुभव करके हुये केवली हैं।।श्री.।।23।।

ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंवेद्यनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'विवेद' वेदत्रय विरहित स्त्री पुरुषादी।
हो विशिष्ट विज्ञानी भगवन्! आतम सुखस्वादी।।श्री.।।24।।

ॐ ह्रीं अर्हं विवेदनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वदताम्बर' प्रभु वक्तागण में सर्वश्रेष्ठ तुम ही।
सब भाषामय दिव्यध्वनी से उपदेशा तुम ही।।श्री.।।25।।

ॐ ह्रीं अर्हं वदताम्बरनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

नाथ! 'अनादिनिधन' तुम्हीं, आदि अंत से हीन।
अतिशय लक्ष्मीयुत तुम्हीं, पूजूँ भक्ति अधीन।।26।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनादिनिधननामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'व्यक्त' आप सुज्ञान से, प्रगट सर्वथा मान्य।
सर्व अर्थ प्रकटित किया, जजत मिले धन धान्य।।27।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'व्यक्तवाक्' प्रभु तुम वचन, सर्व प्राणि को गम्य।
सभी अर्थ स्पष्ट हो, नमत जन्म हो धन्य।।28।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तवाक्नामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'व्यक्तशासन' तुम्हीं, त्रिभुवन में स्पष्ट।
सब विरोधविरहित सुमत, नमूँ नमूँ अति इष्ट।।29।।

ॐ ह्रीं अर्हं व्यक्तशासननामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'युगादिकृत् ' ऋषभसम धर्मतीर्थ करतार।
द्विविध धर्म उपदेशकृत् , जजूँ नमूँ शत बार।।30।।

ॐ ह्रीं अर्हं युगादिकृत्नामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगाधार' युग स्वयं के, धर्मतीर्थ के नाथ।
दिव्यध्वनि से बोध दे, किया त्रिलोक सनाथ।।31।।

ॐ ह्रीं अर्हं युगाधारनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'युगादि' तुम धर्मयुग, का करके प्रारंभ।
मोक्षमार्ग जग को दिया, जजूँ तुम्हें तज दंभ।।32।।

ॐ ह्रीं अर्हं युगादिनामविभूषिताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगदादिज' निज तीर्थ को, करके अविच्छिन्न।
धर्मतीर्थकर्ता हुये, पूजूँ चित्त प्रसन्न।।33।।

ॐ ह्रीं अर्हं जगदादिजनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज प्रभाव से इंद्रगण को भी कर अतिक्रांत।
प्रभु 'अतींद्र' तुमको जजूँ, मिले सौख्य निर्भांत।।34।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतीन्द्रनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'अतींद्रिय' ज्ञानसुख, आप अतीन्द्रिय मान्य।
इंद्रिय के गोचर नहीं, नमूँ मिले सुख साम्य।।35।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतींद्रियनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धीन्द्र' पूर्ण कैवल्यमय, बुद्धी के हो ईश।
शुद्ध बुद्धि मेरी करो जजूँ नमाकर शीश।।36।।

ॐ ह्रीं अर्हं धीन्द्रनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम मोक्ष ऐश्वर्य का, अनुभव करते आप।
प्रभु 'महेन्द्र' तुमको नमूँ, हरो सकल संताप।।37।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेन्द्रनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म अंतरित दूरके, अतींद्रिय सुपदार्थ।
एक समय में देखते, 'अतींद्रियार्थदृक्' नाथ।।38।।

ॐ ह्रीं अर्हं अतींद्रियार्थदृक्नामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विरहित आप हैं, आत्म सौख्य परिपूर्ण।
अतः 'अनिंद्रिय' मुनि कहे, नमत सर्व दुखचूर्ण।।39।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनिंद्रियनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहमिंद्रों से पूज्य प्रभु, 'अहमिन्द्रार्च्य' महान।
अहं अहं कह संपदा, मिले जजत ही आन।।40।।

ॐ ह्रीं अर्हं अहमिन्द्रार्च्यनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपातीति स्वाहा।

बड़े-बड़े सब इन्द्र से, पूजित आप जिनेश।
सभी 'महेंद्रमहित' कहें नमूँ हरो भवक्लेश।।41।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेंद्रमहितनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउविध पूजा से महित, त्रिभुवन पूज्य 'महान्'।
नमूँ सदा मैं भाव से, करो स्वात्म धनवान्।।42।।

ॐ ह्रीं अर्हं महान्नामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबसे ऊँचे उठ चुके, 'उद्भव' जगत्प्रसिद्ध।
जन्म श्रेष्ठ जग में धरा, पूजत करो समृद्ध।।43।।

ॐ ह्री अर्हं उद्भवनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मसृष्टि के बीजप्रभु, 'कारण' आप प्रसिद्ध।
भविजन मुक्ती हेतु हो, नमत कार्य सब सिद्ध।।44।।

ॐ ह्रीं अर्हं कारणनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युग कि आदि में सृष्टि के 'कर्ता' आप जिनेश।
असि मषि आदिक षट् क्रिया उपदेशी परमेश।।45।।

ॐ ह्रीं अर्हं कर्तानामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवसमुद्र के पार को, पहुँचे 'पारग' नाथ।
मुझको पार उतारिये, नमूँ नमूँ नत माथ।।46।।

ॐ ह्रीं अर्हं पारगनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव-सागर सुपांचविध, इससे तारणहार।
'भवतारग' तुमको जजूँ भरो सौख्य भण्डार।।47।।

ॐ ह्रीं अर्हं भवतारगनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'अगह्य' नहिं अन्य के अवगाहन के योग्य।
तुम गुणपार न पा सकें, पूजत सौख्य मनोज्ञ।।48।।

ॐ ह्रीं अर्हं अगाह्यनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगिगम्य प्रभु अति गहन आप अलक्ष्य स्वरूप।
जजूँ 'गहन' अतिशय कठिन आप रूप चिद्रूप।।49।।

ॐ ह्रीं अर्हं गहननामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुह्य' योगि गोचर तुम्हीं, सर्वजनों से गुप्त।
नमूँ नमूँ मुझ मन बसो, करो मोह अरि सुप्त।।50।।

ॐ ह्रीं अर्हं गुह्यनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपजाति-छंद

'परार्ध्य' स्वामी सबमें प्रधाना।
उत्कृष्ट ऋद्धी सुख के निधाना।।
पूजूँ तुम्हें श्री अरनाथ ध्याऊँ।
स्वात्मैक सिद्धी प्रभु शीघ्र पाऊँ।।51।।

ॐ ह्रीं अर्हं परार्ध्यनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! 'परमेश्वर' आप ही हैं।
उत्कृष्ट मुक्ती श्रीनाथ ही हैं।।पूजूँ.।।52।।

ॐ ह्रीं अर्हं परमेश्वरनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

अनन्त ऋद्धी प्रभु आप में हैं।
अतः 'अनंतर्द्धि' प्रभो! तुम्हीं हो।।पूजूँ.।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तर्द्धिनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

अमेय ऋद्धी मर्याद हीना।
अतः 'अमेयर्द्धि' प्रभो! तुम्हीं हो।।पूजूँ.।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं अमेयर्द्धिनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

अचिन्त्य ऋद्धी नहिं सोच सकते।
अतः 'अचिन्त्यर्द्धि' प्रभो! तुम्हीं हो।।पूजूँ.।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं अचिन्त्यर्द्धिनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

'समग्रधी' ज्ञेयप्रमाण बुद्धी।
कैवल्यज्ञानी प्रभु आप ही हो।।
पूजूँ तुम्हें श्री अरनाथ ध्याऊँ।
स्वात्मैक सिद्धी प्रभु शीघ्र पाऊँ।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं समग्रधीनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

हे नाथ! तुम मुख्य सभी जनों में।
हो 'प्राग्र्य' इससे मैं नित्य वंदूँ।।पूजूँ.।।57।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्र्यनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रत्येक मंगल शुभ कार्य में ही।
तुम्हें स्मरते प्रभु 'प्राग्रहर' हो।।पूजूँ।।58।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्राग्रहरनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकाग्र के सम्मुख हो रहे हो।
'अभ्यग्र' इससे मुनिनाथ कहते।।पूजूँ.।।59।।

ॐ ह्रीं अर्हं अभ्यग्रनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रत्यग्र' नूतन संपूर्ण जन में।
प्रभो! विलक्षण तुम ही कहाते।।पूजूँ.।।60।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्यग्रनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वामी सभी के तुम 'अग्र्य' मानें।
मैंने शरण ली अतएव आके।।पूजूँ.।।61।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्र्यनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संपूर्ण जन में प्रभु अग्रसर हो।
अतएव 'अग्रम' कहते सुरेंद्रा।।पूजूँ.।।62।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्रिमनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो ज्येष्ठ सबमें 'अग्रज' कहाते।
त्रैलाक्य में नाथ तुम्हीं बड़े हो।।पूजूँ.।।63।।

ॐ ह्रीं अर्हं अग्रजनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महातपा' घोर सुतप किया है।
बारह तपों को मुझको भि देवो।।पूजूँ.।।64।।

ॐ ह्रीं अर्हं महातपनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेजोमयी पुण्य प्रभो! धरे हो।
'महासुतेजा' तुम तेज फैला।।पूजूँ.।।65।।

ॐ ह्रीं अर्हं महातेजनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महोदर्क' तुम्हें कहे हैं।
महान तप का फल श्रेष्ठ पाया।।पूजूँ.।।66।।

ॐ ह्रीं अर्हं महोदर्कनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

ऐश्वर्य भारी प्रभु आपका है।
अतः 'महोदय' जग में तुम्हीं हो।।पूजूँ.।।67।।

ॐ ह्रीं अर्हं महोदयनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कीर्ती चहूँदिश प्रभु की सुफैली।
'महायशा' नाम कहा इसी से।।पूजूँ.।।68।।

ॐ ह्रीं अर्हं महायशनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! महाधाम तुम्हीं कहाते।
विशाल ज्ञानी सुप्रताप धारी।।पूजूँ.।।69।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाधामनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महासत्त्व' अपार शक्ती।
हे नाथ! मुझको निज शक्ति देवो।।पूजूँ.।।70।।

ॐ ह्रीं अर्हं महासत्त्वनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाधृती' धैर्य असीम धारी।
आपत्ति में धैर्य रहे मुझे भी।।पूजूँ.।।71।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाधृतिनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

प्रभो! 'महाधैर्य' त्रिलोक में भी।
क्षोभादि भय से नहिं आकुली थे।।पूजूँ.।।72।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाधैर्यनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

प्रभो! 'महावीर्य' अनंतशक्ती।
महान तेजोबल वीर्य शाली।।पूजूँ.।।73।।

ॐ ह्रीं अर्हं महावीर्यनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

प्रभो! 'महासंपत्' सर्वसंपत्।
समोसरण में तुम पास शोभे।।
पूजूँ तुम्हें श्री अरनाथ ध्याऊँ।
स्वात्मैक सिद्धी प्रभु शीघ्र पाऊँ।।74।।

ॐ ह्रीं अर्हं महासंपत्नामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महाबल' तनु शक्ति भारी।
ऐसी जगत् में नहिं अन्य के हो।।पूजूँ.।।75।।

ॐ ह्री अर्हं महाबलनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-शिखरणी-छंद-

'महाशक्ती' धारो त्रिभुवन गुरू आप सच में।
महा उत्साही थे बहुविध तपा आप तप भी।।
प्रभू श्री अरजिनवर नित प्रति जपूँ भाव मन से।
मिले ऐसी शक्ती पृथक् कर लूँ आत्म तन से।।76।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाशक्तिनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाज्योती' स्वामी, अद्भुत परंज्ञानमय हो।
मुझे ज्ञानज्योती झटिति प्रभु दो पूर्ण सुख हो।।प्रभू.77।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाज्योतिनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाभूती' स्वामी, विभव अतिशायी जगत में।
प्रभो राजें सिंहासन मणिमय पे अधर ही।।प्रभू.।।78।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाभूतिनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू की जो शोभा 'महाद्युति' नामा धरत है।
नहीं ऐसी कांती रतनमणि में भी दिखत है।।प्रभु.।।79।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाद्युतिनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाबुद्धी पूर्णा 'महामति' का नाम धरती।
हमें भी दे दीजे सुमति भगवन्! होय सुगती।।प्रभू.।।80।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामतिनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महानीती' धारो सकल जन का न्याय करते।
महा दुष्कर्मों से अलग करके सौख्य भरते।।प्रभू.।।81।।

ॐ ह्रीं अर्हं महानीतिनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाक्षान्ती' स्वामी परम करुणा भव्य जन पे।
निकालो दुःखों से करम अरि को माफ करते।।प्रभू.।।82।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाक्षान्तिनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महादय' हो स्वामी, सकल भवि प्राणी पर दया।
किया शिष्यों से भी सतत पलवायी अहिंसा।।प्रभू.।।83।।

ॐ ह्रीं अर्हं महादयनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाविद्वान् भगवान शिवप्रद 'महाप्राज्ञ' तुम हो।
मुझे दीजे बुद्धी भवदधि तरूँ युक्ति करके।।प्रभू.।।84।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाप्राज्ञनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाभागी स्वामी सुखकर 'महाभाग' तुम हो।
महा पूजा पायी सुरपति किया भक्ति रुचि से।।प्रभू.।।85।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाभागनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजानंदात्मा हो सुखमय 'महानंद' प्रभु हो।
मुझे दीजे स्वामी सकल सुखकर मोक्षपदवी।।प्रभू.।।86।।

ॐ ह्रीं अर्हं महानंदनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकवि' हे स्वामिन्! सकल सुखदायी वचन हैं।
प्रभो दीजे शक्ती मुझ वचन सिद्धी प्रगट हो।।
प्रभू श्री अरजिनवर नित प्रति जपूँ भाव मन से।
मिले ऐसी शक्ती पृथक् कर लूँ आत्म तन से।।87।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाकविनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामह' हे स्वामिन्! सुरपति करें आप अर्चा।
महा तेजस्वी हो अखिल जनता सौख्य भरता।।प्रभू.।।88।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामहनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकीर्ती' स्वामी सुयश तुम व्यापा भुवन में।
प्रभू पादाम्बुज को सतत प्रणमूँ स्वात्मनिधि दो।।प्रभू.।।89।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाकीर्तिनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकान्ती' धारो अतुल छवि है आप तनु की।
सभी आधी व्याधी हरण करके स्वस्थ कर दो।।प्रभू.।।90।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाकान्तिनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! ऊँचे देही, 'महावपु' तुम ही चरम हो।
मिटा दो बाधायें विघ्न हरता आप जग में।।प्रभू.।।91।।

ॐ ह्रीं अर्हं महावपुनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहिंसा जीवों की अभयद 'महादान' करते।
हमारी रक्षा भी झटिति प्रभु कीजे जगत् से।।प्रभू.।।92।।

ॐ ह्रीं अर्हं महादाननामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! केवलज्ञानी युगपत् 'महाज्ञान' गुण से।
सभी लोकालोकं विशद त्रयकालिक लखत हो।।प्रभू.।।93।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाज्ञाननामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! एकाग्री हो शिवप्रद 'महायोग' गुण से।
स्वयं में ही साधा निजसुख महाध्यान बल से।।प्रभू.।।94।।

ॐ ह्रीं अर्हं महायोगनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणों की खानी हो अतिशय 'महागुण' मुनि कहें।
गुणों को दे दीजे सकल मुझ दोषादि हन के।।प्रभू.।।95।।

ॐ ह्रीं अर्हं महागुणनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमेरू पे तेरा न्हवन करते इंद्रगण भी।
महापूजा पायी 'महामहपति' आज जग में।।प्रभू.।।96।।

ॐ ह्रीं अर्हं महामहपतिनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरेंद्रों के द्वारा प्रभु 'प्राप्तमहाकल्याणपंचक'।
गरभ जन्मादी में उत्सव किया देवगण ने।।प्रभू.।।97।।

ॐ ह्रीं अर्हं प्राप्तमहाकल्याणपंचकनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी के स्वामी हो अतिशय 'महाप्रभु' भुवन में।
निवारो मोहारी बहुत दुख देता जु मुझको।।प्रभू.।।98।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रभुनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रातीहार्याधिश' चमर छत्रादिक लहा।
शतेंद्रों से पूजित त्रिभुवन विभव आप चरणों।।प्रभू.।।99।।

ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रातिहार्याधिशनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महेश्वर' हो स्वामी सुरपति अधीश्वर तुमहि हो।
सुभक्ती से वंदूँ झटिति शिवलक्ष्मी वरद हो।।प्रभू.।।100।।

ॐ ह्रीं अर्हं महेश्वरनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-चौपाई-

सब पर्याय अनंतानंत, प्रभु में अंतर्लीन बसंत।
पिया नंतपर्याय जिनंद, जजूँ सिद्ध हो परमानंद।।101।।

ॐ ह्रीं अर्हं निष्पीतानंतपर्यायनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठरह सहस शील के ईश, ब्रह्मचर्य से त्रिभुवन शीश।
ब्रह्मा-स्वात्मतत्त्व में लीन, बने सिद्ध पूजत भव क्षीण।।102।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टादशसहस्रशीलेशनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणस्थान चौदहवें काल, 'अइउऋलृ' उच्चारण काल।
जिन अयोगि तत्क्षण लोकाग्र, नमूँ सिद्ध हो मन एकाग्र।।103।।

ॐ ह्रीं अर्हं पंचलघुअक्षरस्थितनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्धद्रव्य से सिद्ध महान्, नमूँ नमूँ परमात्म प्रधान।
पाऊँ स्वात्मतत्त्व का ध्यान, बने अंतरात्मा भगवान।।104।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्रव्यसिद्धनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-चौबोल छंद-

जिन अयोगि द्विचरम समय में, प्रकृति बहत्तर पृथक् किया।
उनको आशिष देकर छोड़ा, परमानंद पियूष पिया।।
उनको पूजत मुझको भी तो, ऐसा द्विचरम समय मिले।
कर्मनाश कर निज सुख पाऊँ, केवलज्ञान प्रसून खिले।।105।।

ॐ ह्रीं अर्हं द्वासप्ततिप्रकृत्याशिषनामसमन्विताय श्रीअरनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक वेदनी मनुषगती अनुपूर्वि आयु पंचेन्द्रि सुभग।
त्रस बादर पर्याप्त यशस्कीर्ती आदेय गोत्र भी उच्च।।

तीर्थंकर मिले तेरह प्रकृती, अंत समय में नष्ट हुईं।
मानों नमन किया सिद्धों को, उन पूजत निज तृप्ति हुई।।106।।

ॐ ह्रीं अर्हं त्रयोदशप्रकृतिप्रणुतनामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक अलोक प्रकाशी, केवलज्ञान लबालब पूर्ण भरा।
गुण अनंत बतलाने वाला, यही एक गुण श्रेष्ठ खरा।।
इससे काल अनंतानंते, सिद्ध मोक्ष में सौख्य भरें।
केवल ज्ञानज्योति हेतु हम, नमन अनंतों बार करें।।107।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञाननिर्भसामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकरायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत में एक ज्ञान ही, चिन्मय जीव स्वरूप धरे।
ज्ञान बिना गुण भले अनंते, उनकी कीमत कौन करें।।
ज्ञानमात्र से ध्यानमग्न हो, केवलज्ञान सूर्य चमकें।
ऐसे सिद्धों को नित पूजत, मेरी आत्मा ज्योति चमके।।108।।

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानैकचिज्जीवघनन्नामसमन्विताय श्रीअरनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

पूर्णार्घ्य-शंभु-छंद

श्री वृक्षलक्षणाआदिक एक सौ, आठ नाम अतिशयकारी।
मैं पूजूँ ध्याऊँ भक्ति करूँ, पा जाऊँ निज संपति सारी।।
बहिरात्म अवस्था छोड़ नाथ! अंतर आतम शुद्धात्म बनूँ।
तुम भक्ति युक्ति से शक्ति पाय मुक्तिपद पा जिनराज बनूँ।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीवृक्षलक्षणादि-अष्टोत्तरशतनाममंत्रविभूषिताय श्री-अरनाथतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।

– जाप्यमंत्र –

1. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीशांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथतीर्थंकरेभ्यो नमः।

अथवा

1. ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंकरचक्रवर्तिकामदेवपदसमन्वित-श्रीशांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथेभ्यो नमः।

(दोनों में से कोई भी एक मंत्र 108 बार या 9 बार सुगंधित पुष्पों से या लवंग से या पीले चावल से जपें)

जयमाला

–दोहा–

हस्तिनागपुर में हुये, गर्भ जन्म तप ज्ञान।
सम्मेदाचल मोक्षथल, पूजूँ अर भगवान।।1।।

–त्रिभंगी छंद–

पितु नृपति सुदर्शन सोमवंशवर, प्रसू मित्रसेना सुत थे।
आयू चौरासी सहस वर्ष धनु, तीस तनू स्वर्णिम छवि थे।।
गुरु तीस गणाधिप मुनि पचास, हज्जार आर्यिका साठ सहस।
श्रावक इक लाख व साठ सहस, श्राविका लाख त्रय धर्मनिरत।।2।।

–पंचचामर छंद–

जयो जिनेश! आप तीर्थनाथ तीर्थरूप हो।
जयो जिनेश! आप मुक्तिनाथ मुक्तिरूप हो।।
जयो जिनेश! आप तीन लोक के अधीश हो।
जयो जिनेश! आप सर्व आश्रितों के मीत हो।।3।।

सभी सुरेन्द्र भक्ति से सदैव वंदना करें।
सभी नरेन्द्र आपकी सदैव अर्चना करें।।
सभी खगेन्द्र हर्ष से जिनेन्द्र कीर्ति गावते।
सभी मुनीन्द्र चित्त में तुम्हीं को एक ध्यावते।।4।।

अपूर्व तेज आप देख कोटि सूर्य लज्जते।
अपूर्व सौम्य मूर्ति देख कोटि चन्द्र लज्जते।।
अपूर्व शांति देख क्रूर जीव वैर छोड़ते।
सुमंद मंद हास्य देख शुद्ध चित्त होवते।।5।।

अनेक भव्य आपके पदाब्ज पूजते सदा।
अनेक जन्म पाप भी क्षणेक में नशें तदा।।
अनेक जीव भक्ति बिन अनंत जन्म धारते।
अनेक जीव भक्ति से अनंत सौख्य पावते।।6।।

अनंत ज्ञानरूप हो अनंत ज्ञानकार हो।
अनंत दर्शरूप हो अनंत दर्शकार हो।।
अनंत सौख्यरूप हो अनंत सौख्यकार हो।
अनंत वीर्यरूप हो अनंत शक्तिकार हो।।7।।

–दोहा–

अरतीर्थंकर जगप्रथित, मीन चिन्ह से नाथ! ।
पावें अविचल कीर्ति को, जो पूजें नत माथ।।8।।

कामदेव चक्रीश प्रभु, अठारवें तीर्थेश।
''ज्ञानमती'' कैवल्य हित, नमूँ नमूँ परमेश।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीअरनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो भाक्तिकजन तीर्थंकरत्रय–विधान भक्ती से करते हैं।
श्री शांतिनाथ श्री कुंथुनाथ, अरनाथ प्रभू को यजते हैं।।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सब रोग शोक भय हरते हैं।
नवनिधि ऋद्धी सिद्धी पाकर, कैवल्य ज्ञानमति लभते हैं।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

बड़ी जयमाला

–पंचचामर छंद–

जयो जयो जयो जिनेंद्र इंद्रवृंद बोलते।
त्रिलोक में महागुरू सु आप नाम तोलते।।
सुधन्य धन्य धन्य आप साधुवृंद बोलते।
जिनेश आप भक्त ही तो निज किवांड खोलते।।1।।

समोसरण में आपके महाविभूतियाँ भरीं।
अनेक ऋद्धि सिद्धियाँ सुआप पास में खड़ीं।।
अनंत अंतरंग गुण समूह आप में भरें।
गणीन्द्र औ सुरेंद्र चक्रि आप संस्तुती करें।।2।।

हरिन्मणी के पत्र पद्मराग के सुपुष्प हैं।
अशोक वृक्ष देखते समस्त शोक अस्त हैं।।
अनेक देववृंद पुष्पवृष्टि आप पे करें।
सुगंध वर्ण वर्ण के सुमन खिले खिले गिरें।।3।।

जिनेश आपकी ध्वनी अनक्षरी सुदिव्य है।
समस्त भव्य कर्ण में करे सुअर्थ व्यक्त है।।
न देशना कि चाह है न तालु ओष्ठ पुट हिलें।
असंख्य जीव के धुनी से चित्त पद्मिनी खिलें।।4।।

सुचामरों कि पंक्तियाँ ढुरें ये सूचना करें।
नमें तुम्हें सुभक्त वे हि ऊर्ध्व में गमन करें।।
सुसिंहपीठ आपका अनेक रत्न से जड़ा।
विराजते सु आप हैं अतः महत्व है बढ़ा।।5।।

प्रभा सुचक्र कोटि सूर्य से अधिक प्रभा करे।
समस्त भव्य के उसी में सात भव दिखा करें।।
सुदेवदुन्दुभी सदा गभीर नाद को करे।
असंख्य जीव का सुचित्त खींच के वहाँ करे।।6।।

सफेद छत्र तीन जो जिनेश शीश पे फिरें।
प्रभो त्रिलोकनाथ आप सूचना यही करें।।
सुप्रातिहार्य आठ ये हि बाह्य की विभूतियाँ।
सुरेश ने रचे तथापि आप पुण्यराशियाँ।।7।।

प्रभो !तुम्हीं महान मुक्तिवल्लभापती कहे।
प्रभो! तुम्हीं प्रधान ईश सर्व विश्व के कहे।।
प्रभो! तुम्हें सदा नमें सुभक्ति आप में धरें।
अनंत काल तक वहीं अनंत सौख्य को भरें।।8।।

नमो नमो जिनेन्द्रदेव! आप सौख्यरूप हो।
नमो नमो जिनेन्द्रदेव! आप चित्स्वरूप हो।।
अनंत दिव्यज्ञान से, समस्त लोक भासते।
अनंत दिव्य चक्षु से समस्त विश्व लोकते।।9।।

नमो जिनेन्द्र देव! सर्वशक्तिमान हो।
अनंत वस्तु देखते तथापि नहीं श्रांत हो।।
नमो जिनेन्द्र देव! आप में अनंत गुण सही।
गणीन्द्र भी गिनें तथापि पार पावते नहीं।।10।।

प्रभो ! असंख्य भव्य जीव आपकी शरण गहें।
अनादि से अनंत दुःख वार्धि पार वो लहें।।
असंख्य जीव मानवश न आस पास आवते।
स्वयं हि वे अपार भव अरण्य में हि जावते।।11।।

अनेक जीव दृष्टि रत्न पायके निहाल हों।
अनेक जीव तीन रत्न पाय मालामाल हों।।
अनेक जीव आप भक्ति में विभोर हो रहे।
अनेक जीव मृत्यु को पछाड़ पुण्य को लहें।।12।।

मुनींद्र वृंद हाथ जोड़ शीश नावते सभी।
पुनः पुनः नमें तथापि तृप्ति ना लहें कभी।।

सुरेन्द्रवृंद अष्टद्रव्य लाय अर्चना करें।
सुदिव्य रत्न को चढ़ाय तृप्ति ना धरें कभी।।13।।

नरेन्द्रवृंद भक्ति में विभोर नृत्य भी करें।
सुरांगना जिनेन्द्र भक्ति गीत गा की ध्वनी करें।।
खगेन्द्रवृंद गीत गा संगीत को करें।
खागांगना के साथ नाथ ! अर्चना करें वहां।।14।।

जिनेन्द्र ! आपकी सभा असंख्य भव्य से घिरी।
तथापि क्लेश ना किसी को ये प्रभाव से भरी।।
निरक्षरी ध्वनी खिरे सभी के कर्ण में पड़े।
सभी समझ रहें स्वयं प्रभो ! प्रभाव से जुड़े।।15।।

सुभव्य जीव ही सुनें लोकते निजात्म तत्व।
अपूर्व तेज आपका न कोई पार पा सके।।
जयो जयो जयो प्रभो ! अनंत ऋद्धि पूर्ण हो।
करो मुझे निहाल नाथ ! आप भक्ति पूर्ण हो।।16।।

–दोहा–

तुम गण सूत्र पिरोय स्रज, विविध वर्णमय फूल।
धरें कण्ठ उन 'ज्ञानमति' लक्ष्मी हो अनुकूल।।17।।

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थंकरचक्रवर्तिकामदेवपदसमन्वितश्रीशांतिनाथ–कुंथुनाथ–अरनाथेभ्यो जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो भाक्तिकजन तीर्थंकरत्रय–विधान भक्ती से करते हैं।
श्री शांतिनाथ श्री कुंथुनाथ, अरनाथ प्रभू को यजते हैं।।
वे नित नव मंगल प्राप्त करें, सब रोग शोक भय हरते हैं।
नवनिधि ऋद्धी सिद्धी पाकर, कैवल्य ज्ञानमति लभते हैं।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

श्री शांतिनाथ श्री कुंथुनाथ, अरनाथ प्रभू को नमन करूं।
तीर्थंकर चक्री कामदेव, त्रय पदधर का संस्तवन करूं।।
जिनके शासन में ज्ञान मिला, उन महावीर प्रभु को प्रणमूं।
श्री गौतम स्वामी गणधर गुरु, उनकी वाणी को नित्य नमूं।।1।।

श्री मूलसंघ में कुंदकुंद, आम्नाय जगत में मान्य रहे।
सरस्वतीगच्छ गण बलात्कार, सम्पूर्ण विश्व में ख्यात रहे।।
इस परम्परा में सदी बीसवीं, में गुरु प्रथमाचार्य हुए।
चारित्रचक्रवर्ती यतिपति, श्री शांतिसागराचार्य हुए।।2।।

इनके जो प्रथम शिष्य ही प्रथमहि पट्टाधीश मान्य मुनिवर।
श्री वीरसागराचार्य गुरू, उनको नित वंदूं अंजलिकर।।
वैशाख वदी द्वितीया उनसे, आर्यिका व्रतों को प्राप्त किया।
गुरुवर से ज्ञानमती बनकर कुछ नाम स्वयं का सार्थ किया।।3।।

वीराब्द पच्चीस सौ उनतालिस, वर ज्येष्ठ कृष्ण चौदशसुधन्य।
ईस्वी सन दो हजार तेरह, नवनिधि विधान अतिशय उत्तम।।
श्री शांतिनाथ श्री कुंथुनाथ, अरनाथ गुणों की पूजा है।
तीनों प्रभु की भक्ती का फल, यह अद्भुत और अनूठा है।।4।।

यह विधान युग युग तक भक्तों, को अतिशय पुण्य प्रदान करे।
जब तक यह तीर्थ हस्तिनापुर, मेरी रचना प्रभु गुण उचरे।।
जब तक यहाँ जंबूद्वीप सुमेरु, तेरहद्वीप तीर्थ उत्तम।
यहाँ तीन लोक रचना सुंदर, तब तक विधान फल दे शुभतम।।5।।

–दोहा–

गणिनी ज्ञानमती रचित, त्रयतीर्थेश विधान।
सब जग में शुभ क्षेमकृत, मुझको दे निजधाम।।6।।

।।इति शं भूयात्।।

हस्तिनापुर तीर्थ पूजा

रचयित्री-गणिनी ज्ञानमती

स्थापना –गीता छंद

श्री शांति कुंथू अर जिनेश्वर, जन्म ले पावन किया।
दीक्षा ग्रहण कर तीर्थ यह, मुनिवृन्द मनभावन किया।।
निज ज्ञान ज्योती प्रकट कर, शिवमार्ग को प्रकटित किया।
इस हस्तिनापुर क्षेत्र को, मैं पूजहूँ हर्षित हिया।।

ॐ ह्रीं हस्तिनापुरक्षेत्रे गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञान-कल्याणकधारकाः श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकराः! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं हस्तिनापुरक्षेत्रे गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञान-कल्याणकधारकाः श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकराः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं हस्तिनापुरक्षेत्रे गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञान-कल्याणकधारकाः श्रीशांति-कुंथु-अरतीर्थंकराः! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधीकरणं।

–चामर छंद–

तीर्थ रूप शुद्ध स्वच्छ सिंधु नीर लाइये।
गर्भवास दुःखनाश तीर्थ को चढ़ाइये।।
हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंकुमादि अष्ट गंध लेय तीर्थ पूजिये।
राग आग दाह नाश पूर्ण शांत हूजिये।।
हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्र तुल्य श्वेत शालि पुंज को रचाइये।
देह सौख्य छोड़ आत्म सौख्य पुंज पाइये।।
हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंद केतकी गुलाब वर्ण-वर्ण के लिए।
मार मल्लहारि तीर्थक्षेत्र को चढ़ा दिए।।
हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।4।।

ॐ ह्रीं शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

खीर पूरिका इमर्तियाँ भराय थाल में।
तीर्थ क्षेत्र पूजते क्षुधा महा व्यथा हने।।
हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।5।।

ॐ ह्रीं शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप में कपूर ज्योति अंधकार को हने।
आरती करंत अंतरंग ध्वांत को हने।।
हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।6।।

ॐ ह्रीं शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप गंध लेय अग्निपात्र में जलाइये।
मोह कर्म भस्म को उड़ाय सौख्य पाइये।।

हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।7।।

ॐ ह्रीं शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मातुलिंग आम्र सेव संतरा मंगाइये।
तीर्थ पूजते हि सिद्धि संपदा सुपाइये।।
हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।8।।

ॐ ह्रीं शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंध अक्षतादि अर्घ को बनाइये।
मुक्ति अंगना निमित्त तीर्थ को चढ़ाइये।।
हस्तिनागपुर पवित्र तीर्थ अर्चना करूँ।
तीर्थनाथ पाद की सदैव वंदना करूँ।।9।।

ॐ ह्रीं शांति-कुंथु-अरतीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपो-ज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

प्रासुक मिष्ट सुगंध जल, क्षीरोदधि सम श्वेत।
तीरथ पर धारा करूँ, तिहुँ जग शांती हेतु।।

शांतये शांतिधारा।।

पारिजात के पुष्प से, पुष्पांजली करंत।
पावन तीर्थ महान यह, करे भवोदधि अंत।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

जयमाला

–दोहा–

समवसरण में राजते, ज्ञानज्योति से पूर्ण।
शांति-कुंथु-अर नाथ को, पूजत ही दुःख चूर्ण।।1।।

–शंभु छंद –

श्री आदिनाथ को सर्वप्रथम, इक्षूरस का आहार दिया।
श्रेयांस नृपति ने, यहाँ तभी से, दान तीर्थ यह मान्य हुआ।।
देवों ने पंचाश्चर्य किया, रत्नों की वर्षा खूब हुई।
वैशाख सुदी अक्षय तृतिया, यह तिथि भी सब जग पूज्य हुई।।2।।

श्री शांति-कुंथु-अर तीर्थंकर, इन तीनों के इस तीरथ पर।
हुए गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान चार, कल्याणक इस ही भूतल पर।।
अगणित देवी देवों के संग, सौधर्म इंद्र तब आये थे।
अतिशय कल्याणक पूजा कर, भव-भव के पाप नशाये थे।।3।।

आचार्य अकंपन के संघ में, मुनि सात शतक जब आये थे।
उन पर बलि ने उपसर्ग किया, तब जन-जन मन अकुलाये थे।।
श्री विष्णुकुमार मुनीश्वर ने, उपसर्ग दूर कर रक्षा की।
रक्षाबंधन का पर्व चला, श्रावण सुदि पूनम की तिथि थी।।4।।

गंगा में गज को ग्राह ग्रसा, तब सुलोचना ने मंत्र जपा।
द्रौपदी सती का चीर बढ़ा, सतियों की प्रभु ने लाज रखा।।
श्रेयांस सोमप्रभ जयकुमार, आदीश्वर के गणधर होकर।
शिव गये अन्य नरपुंगव भी, पांडव भी हुए इसी भू पर।।5।।

राजा श्रेयांस ने स्वप्ने में, देखा था मेरु सुदर्शन को।
सो आज यहाँ इक सौ इक फुट, उत्तुंग सुमेरू बना अहो।।
यह जंबूद्वीप बना सुंदर, इसमें अठहत्तर जिनमंदिर।
इक सौ तेइस हैं देवभवन, उसमें भी जिनप्रतिमा मनहर।।6।।

जो भक्त भक्ति में हो विभोर, इस जम्बूद्वीप में आते हैं।
उत्तुङ्ग सुमेरू पर चढ़कर, जिन वंदन कर हर्षाते हैं।।
फिर सब जिनगृह को अर्घ चढ़ा, गुण गाते गद्गद हो जाते।
वे कर्म धूलि को दूर भगा, अतिशायी पुण्य कमा जाते।।7।।

श्री आदिनाथ, भरतेश और, बाहूबलि तीन मूर्ति अनुपम।
श्री शांति कुंथु अर चक्रीश्वर, तीर्थंकर की मूर्ती निरुपम।।
वर कल्पवृक्ष महावीर प्रभू का, जिनमंदिर अतिशोभित है।
यह कमलाकार बना सुन्दर, इसमें जिनप्रतिमा राजित हैं।।8।।

श्री शांतिनाथ मंदिर-वृषभेश्वर मंदिर-वासुपूज्य मंदिर।
है तेरहद्वीप जिनालय एवं बना ''ॐ'' मंदिर सुन्दर।।
ग्रह की बाधा हरने वाला, नवग्रहशांती जिनमंदिर है।
इस सहस्र आठ प्रतिमाओं से युत, सहस्रकूट जिनमंदिर है।।9।।

है विद्यमान विंशति प्रतिमाओं से संयुत मंदिर सुन्दर।
आदी तीर्थंकर ऋषभदेव का, कीर्तिस्तंभ बना मनहर।।
श्री शांति-कुंथु-अरनाथ प्रभू की, बड़ी-बड़ी प्रतिमाएँ हैं।
फिर तीनलोक रचना के, जिनबिम्बों को शीश झुकाऊँ मैं।।10।।

जय शांति कुंथु अर तीर्थेश्वर, जय इनके पंचकल्याणक की।
जय जय हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र, जय जय हो सम्मेदाचल की।।
जय जंबूद्वीप तेरहों द्वीप, नंदीश्वर के जिन भवनों की।
जय भीम, युधिष्ठिर, अर्जुन और सहदेव नकुल पांडव मुनि की।।11।।

ॐ ह्रीं शांति-कुंथु-अर-तीर्थंकर-गर्भ-जन्म-तपोज्ञानकल्याणकपवित्र-हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। पुष्पांजलिः।।

–दोहा –

तीर्थक्षेत्र की अर्चना, हरे सकल दुख दोष।
'ज्ञानमती' संपत्ति दे, भरे आत्मसुख कोष।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

भगवान श्री शांति, कुंथु, अरहनाथ की आरती

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–चांद मेरे आ जा रे.....

आरती तीर्थंकर त्रय की,
शांति, कुंथु, अरनाथ जिनेश्वर की पदवी त्रय की।।आरती.।।टेक.।।
हस्तिनापुरी में तीनों, जिनवर के जन्म हुए हैं।
मेरू की पांडुशिला पर, इन सबके न्हवन हुए हैं।।
आरती तीर्थंकर त्रय की ।।1।।
निज चक्ररत्न के द्वारा, छह खण्ड विजय कर डाला।
तीनों ने उसे फिर तजकर, जिनरूप दिगम्बर धारा।।
आरती तीर्थंकर त्रय की ।।2।।
कुरूजांगल के ही वनों में, कैवल्य परम पद पाया।
निज दिव्यध्वनी के द्वारा, आतमस्वरूप समझाया।।
आरती तीर्थंकर त्रय की ।।3।।
शुभ चार-चार कल्याणक, तीनों जिनवर के हुए हैं।
हस्तिनापुरी में ऐसे, इतिहास अनेक जुड़े हैं।।
आरती तीर्थंकर त्रय की ।।4।।
सम्मेदशिखर तीनों की, निर्वाणभूमि कहलाती ।
''चंदनामती'' प्रभु आरति, से भव बाधा नश जाती।।
आरती तीर्थंकर त्रय की ।।5।।

नवनिधियों के स्वामी ये, माने तीनों जिनवर हैं।
नवनिधि विधान में इनकी, आरति सचमुच सुखप्रद है।।
आरती तीर्थंकर त्रय की ।।6।।

भजन

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–कभी राम बनके.....

शान्ति-कुंथु-अरहनाथ, तीन लोक के हैं नाथ,
तीनों जिनवर को तीन बार नमन है।।टेक.।।

जैनधर्म के ये तीन तीर्थंकर।
हस्तिनापुर में जन्में तीनों जिनवर।।
तीन पदवी से सनाथ, तीन लोक के हैं नाथ,
तीनों जिनवर को तीन बार नमन है।।1।।

तीर्थंकर चक्रवर्ती कामदेव हैं।
ये तो सभी देवताओं के भी देव हैं।।
जग को करते ये सनाथ, तीन लोक के हैं नाथ,
तीनों जिनवर को तीन बार नमन है।।2।।

चौदह रत्न नव निधि के ये स्वामी।
छह खण्डों के अधिपति नामी।।
चक्ररत्न से सनाथ, तीन लोक के हैं नाथ,
तीनों जिनवर को तीन बार नमन है।।3।।

राज्य किया फिर तज दिया सबको।
वन में गये दीक्षा धारी किया तप को।।
केवलज्ञान से सनाथ, तीन लोक के हैं नाथ,
तीनों जिनवर को तीन बार नमन है।।4।।

जम्बूद्वीप में हैं इनकी बड़ी प्रतिमा।
''चंदनामति'' बहुत जिनकी महिमा।।
इनसे तीर्थ है सनाथ, तीन लोक के हैं नाथ,
तीनों जिनवर को तीन बार नमन है।।5।।